RNI No. : UPBIL/25/A0683

www.vicharsetu.com

वर्ष-01 | अंक-03 | मार्च-अप्रैल 2026 | पृष्ठ संख्या-44

मूल्य ₹ 40

विचार सेतु

विचार से विश्वास तक

प्रयागराज से प्रकाशित

यूजीसी का मान

शंकराचार्य का अपमान

2027 विस चुनाव का घमासान

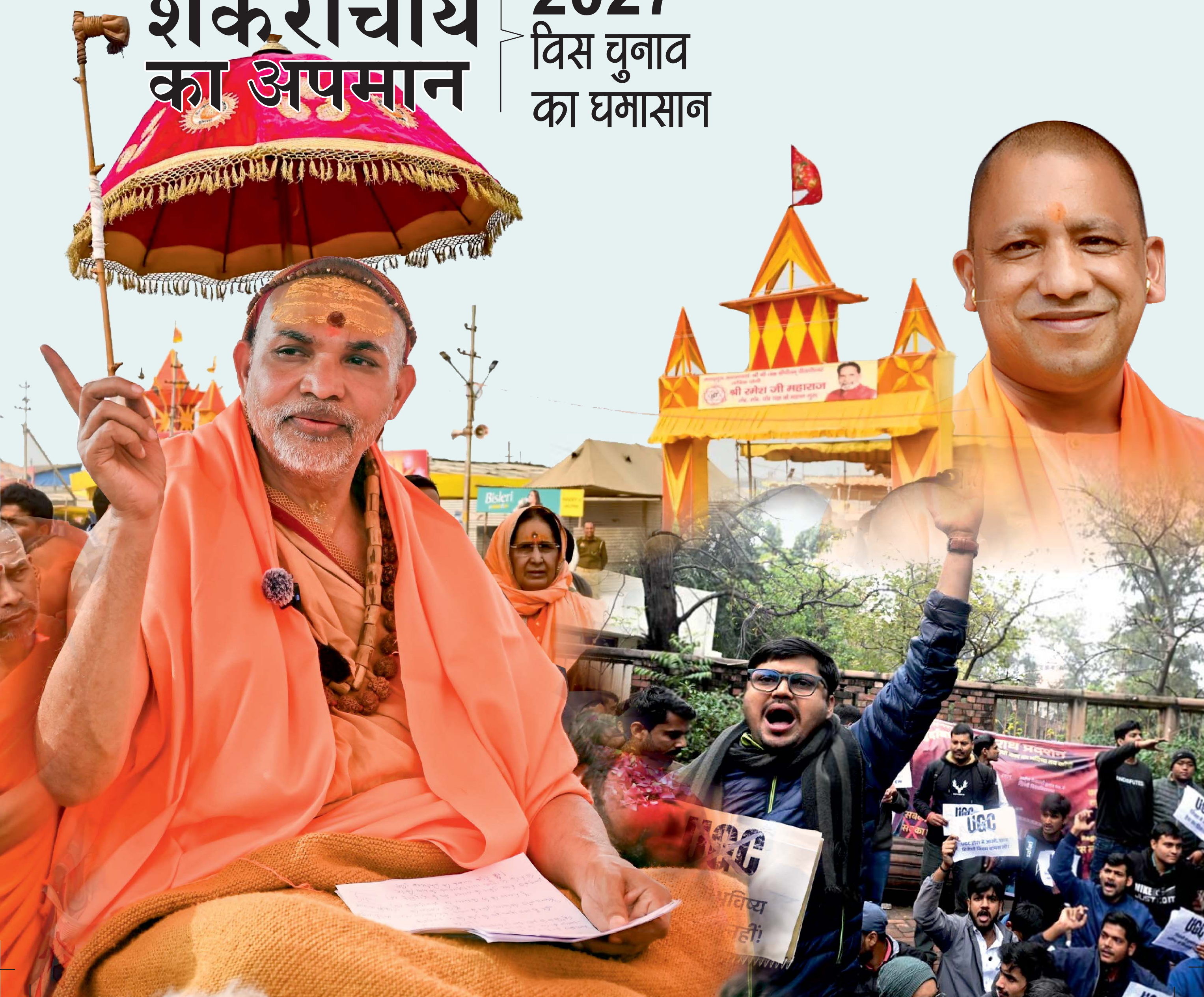

विसे
विचार से विश्वास तक

विचार सेतु

विचार से विश्वास तक रहेगा
प्रयागराज से प्रकाशित

राज, समाज, साहित्य, संस्कृति, कला एवं पर्यटन की राष्ट्रीय पत्रिका/समाचार पत्र

आप भी अपना विज्ञापन देकर कारोबार को बढ़ाएं

हर तस्वीर एक कहानी बताती है और हम अपनी पत्रिका से लाखों को बताते हैं। हम आपके लिए ऐसी तस्वीरें लेकर आए हैं जो बिना किसी भेदभाव के वास्तविक दुनिया और लोगों के बारे में सच्चाई बताती है।

हमारे साथ विज्ञापन करके अपने व्यवसाय को दें नई उड़ान

विज्ञापन की दरें :-

बैक कवर-21,000/-	फुल पेज- 11,000/-
फ्रंट इनर कवर-15,000/-	हाफ पेज- 6,000/-
बैक इनर कवर-15,000/-	क्वाटर पेज-3,000/-

Follow us

विचार सेतु
विचार से विश्वास तक रहेगा
प्रयागराज से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय : 11/2सी/1क्यू, भोला का पुरा,
प्रीतम नगर, धूमनगंज,
प्रयागराज -211011

Mob. No. 9598163216-7007044100
Website: www.vicharsetu.com
e-Mail: vicharsetu2024@gmail.com

06
यूजीसी का मान, शंकराचार्य का अपमान
तीन माह पहले 23 दिसंबर को ब्राह्मण विधायकों की बैठक को लेकर उठा तूफान पूरी तरह थम भी न पाया था कि जनवरी महीने में यूजीसी ने खासा बवंडर मचा दिया।...

10
टी-20 वर्ल्ड कप जीत भारत बना फटाफट क्रिकेट का सम्राट
फटाफट क्रिकेट के नाम से मशहूर टी-20 प्रारूप में भारत ने एक बार फिर अपनी ताकत का लोहा मनवाते हुए विश्व क्रिकेट में एक नया इतिहास और एक नया...

12
हिंदू सम्मेलन की जमीन पर यूजीसी का बुलडोजर
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पिछले एक दशक से जिस परियोजना पर चुपचाप, धैर्यपूर्वक और जमीनी स्तर पर काम कर रहा था। हिंदू समाज की एकजुटता पर सबसे...

14
सियासत के सबसे लचीले रणनीतिकार : हमारे सुशासन बाबू
हम बात कर रहे हैं राजनीति के सबसे लचीले किरदार की, जिनका नाम है नीतीश कुमार। करीब 4 दशक से अधिक के ....

42
खुशी मुखर्जी
के कपड़ों पर रैपर शैंटी शर्मा का भड़काऊ बयान
एक्ट्रेस और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर खुशी मुखर्जी एक बार फिर चर्चा में हैं। इस बार वजह उनका बोल्ड आउटफिट और उस पर दिया गया रैपर शैंटी शर्मा का बयान है।

18
अकेले ही चुनाव लड़ेगी बसपा
विधानसभा 2027 चुनाव की तैयारियों में जुटी बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने इस बार अकेले ही चुनावी मैदान में उतरने का फैसला कर सियासी खेमों में...

24
पर्यावरण से आगे भारत के विकास का बड़ा अवसर 'कार्बन क्रेडिट'
आज पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन की चुनौती से जूझ रही है। मौसम का असंतुलन, बढ़ती गर्मी, अनियमित बारिश और प्राकृतिक आपदाएँ अब सामान्य बात बनती जा रही हैं।...

विचार सेतु

वर्ष-01, अंक-03, मार्च-अप्रैल 2026

RNI No. : UPBIL/25/A0683
पृष्ठ संख्या-44, मूल्य- ₹ 40

सम्पादक : रेखा तिवारी

प्रधान सम्पादक : प्रदीप तिवारी, एडवोकेट
कार्यकारी सम्पादक : संजय कुमार

संरक्षक मण्डल
पदमश्री डॉ. सुनील जोगी, प्रेम जन्मेजय, रविनंदन सिंह, हर्ष वर्धन त्रिपाठी, डॉ. धनंजय चोपड़ा

समन्वय संपादक : शिवा शंकर पाण्डेय
राजनैतिक संवाददाता : भास्कर मिश्रा
सांस्कृतिक संवाददाता : राजेश ओझा

राज्य प्रतितिधि
उत्तर प्रदेश : विशाल ओझा
बिहार : डॉ. चंद्रकांत भट्ट
मध्य प्रदेश : सुमित ओरछा
दिल्ली/एनसीआर : काशी शर्मा
पंजाब : विजय गर्ग
राजस्थान : गगन अग्रवाल
उत्तराखंड : ज्ञान प्रकाश पाण्डेय
हरियाणा : गजेन्द्र सिंह 'दहिया'
महाराष्ट्र : डॉ. मोतीलाल गुप्त 'आदित्य'
उड़ीसा : डॉ. रजनीकांत मिश्र
असम : त्रिदीप कलिता
त्रिपुरा : तनुज शाह
पश्चिम बंगाल : मानवेंद्र शर्मा

डिजाइन एवं प्रोडक्शन
एनएम मीडिया सॉल्यूशंस (9717177725)

विधिक सलाहकार
जयवर्धन त्रिपाठी, आदर्श पराशर
अधिवक्ता इलाहाबाद उच्च न्यायालय,

छायाकार : संजय सागर, **अमित शर्मा**

पंजीकृत कार्यालय - 11/2सी/1क्यू, भोला का पुरा, प्रीतम नगर, धूमनगंज, प्रयागराज 211011
फोन: 9598163216,7007044100
9415189919
वेब : www.vicharsetu.com
ई-मेल : vicharsetu2024@gmail.com

स्वामी और प्रकाशक रेखा तिवारी द्वारा आइडियल ग्राफिक्स 48/136/2, पानदरीबा, शाहगंज, प्रयागराज,उत्तर प्रदेश-211003 से प्रकाशित।

संपादक-रेखा तिवारी*
मुद्रक : आइडियल ग्राफिक्स

इस पत्रिका के सभी पद अवैतनिक हैं

लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित

*इस चयन में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद प्रयागराज न्यायालय के अधीन होंगें।

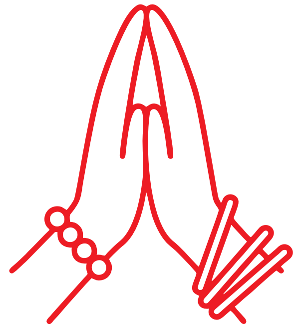

संक्रमण के दौर में भारत : विचार, संवाद और सांस्कृतिक चेतना की आवश्यकता

समय का प्रत्येक कालखंड अपने भीतर कुछ प्रश्न, कुछ चुनौतियाँ और कुछ संभावनाएँ लेकर आता है। वर्तमान समय भी उसी प्रकार का एक संक्रमणकाल है, जहाँ विश्व व्यवस्था तेजी से बदल रही है, राजनीति के नए समीकरण बन रहे हैं, समाज के स्वरूप में परिवर्तन हो रहा है और तकनीकी क्रांति ने मनुष्य के जीवन की गति को पहले से कहीं अधिक तेज कर दिया है। भारत भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं है। बल्कि यह कहना अधिक उचित होगा कि भारत आज ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहाँ उसकी हर दिशा में बढ़ती उपस्थिति विश्व के लिए भी महत्वपूर्ण बनती जा रही है। आर्थिक विकास, वैश्विक कूटनीति, सांस्कृतिक प्रभाव और लोकतांत्रिक शक्ति—इन सभी क्षेत्रों में भारत का विस्तार और प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

लेकिन हर विकास अपने साथ कुछ प्रश्न भी लेकर आता है। विकास केवल आर्थिक आंकड़ों तक सीमित नहीं होता; वह समाज की चेतना, संस्कृति की जीवंतता और लोकतंत्र की मजबूती से भी जुड़ा होता है। यदि इन मूल्यों को साथ लेकर आगे बढ़ा जाए तभी विकास सार्थक बनता है। इसी संदर्भ में 'विचार सेतु' का यह अंक आपके सामने है—एक ऐसे समय में जब विचारों के स्तर पर संवाद की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है।

बदलती वैश्विक व्यवस्था और भारत की भूमिका

21वीं सदी का तीसरा दशक वैश्विक राजनीति में बड़े परिवर्तनों का संकेत दे रहा है। विश्व शक्ति संतुलन की राजनीति, ऊर्जा संसाधनों की प्रतिस्पर्धा और क्षेत्रीय संघर्षों ने अंतरराष्ट्रीय संबंधों को जटिल बना दिया है। दुनिया के कई हिस्सों में चल रहे तनाव यह संकेत देते हैं कि वैश्विक शांति का प्रश्न आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना पिछली शताब्दियों में था। अंतरराष्ट्रीय कूटनीति के मंचों पर यह चर्चा बार-बार उठती है कि क्या दुनिया सहयोग की दिशा में आगे बढ़ेगी या टकराव की राजनीति और गहरी होती जाएगी। ऐसी स्थिति में भारत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत ने हमेशा से शांति, सह-अस्तित्व और संवाद की नीति को प्राथमिकता दी है। भारतीय कूटनीति का मूल आधार यही रहा है कि समस्याओं का समाधान युद्ध से नहीं बल्कि संवाद से निकलता है। आज विश्व समुदाय भारत को केवल एक उभरती आर्थिक शक्ति के रूप में ही नहीं देख रहा, बल्कि एक ऐसे देश के रूप में भी देख रहा है जो वैश्विक स्तर पर संतुलन और स्थिरता का संदेश दे सकता है। भारत की सभ्यता और संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उसने विविधता को स्वीकार करते हुए समन्वय की परंपरा को विकसित किया है। यही परंपरा आज वैश्विक राजनीति में भी प्रासंगिक दिखाई देती है।

भारतीय लोकतंत्र : शक्ति और चुनौती

भारत का लोकतंत्र विश्व के लिए एक अद्भुत उदाहरण है। विविधताओं से भरे इस देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था का सफल संचालन अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। लेकिन लोकतंत्र केवल चुनावों का नाम नहीं है। लोकतंत्र एक विचार है, एक संस्कृति है और एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें नागरिकों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक होती है। आज भारतीय लोकतंत्र कई नई चुनौतियों का सामना कर रहा है। राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के बीच संवाद की संस्कृति कमजोर होती दिखाई देती है। सोशल मीडिया और त्वरित सूचना के दौर में विचारों की

गहराई कई बार सतही बहसों में बदल जाती है। यह स्थिति लोकतंत्र के लिए चिंता का विषय हो सकती है, क्योंकि लोकतंत्र का आधार केवल बहुमत नहीं बल्कि सहमति और संवाद भी होता है। राजनीतिक मतभेद लोकतंत्र की स्वाभाविक प्रक्रिया हैं, लेकिन यदि ये मतभेद कटुता और विभाजन का रूप ले लेते हैं तो लोकतांत्रिक व्यवस्था कमजोर पड़ सकती है। इसलिए यह आवश्यक है कि राजनीति में स्वस्थ विमर्श की परंपरा को मजबूत किया जाए।

समाज और संस्कृति का बदलता परिदृश्य

भारत की सांस्कृतिक परंपरा हजारों वर्षों पुरानी है। यहाँ साहित्य, संगीत, कला और दर्शन ने समाज को गहराई से प्रभावित किया है। लेकिन आधुनिकता और वैश्वीकरण के इस दौर में समाज के सामने नई चुनौतियाँ भी खड़ी हो रही हैं। तकनीकी विकास ने जीवन को सुविधाजनक बनाया है, लेकिन साथ ही यह प्रश्न भी उठाया है कि क्या इस तेज गति में हम अपनी सांस्कृतिक जड़ों से दूर होते जा रहे हैं। डिजिटल युग ने अभिव्यक्ति के नए अवसर दिए हैं, लेकिन यह भी सच है कि सूचना की अधिकता के बीच सत्य और असत्य के बीच अंतर करना कठिन होता जा रहा है। ऐसे समय में साहित्य और संस्कृति की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

संवाद का पुल : विचार सेतु

समाज में संवाद की संस्कृति जितनी मजबूत होगी, समाज उतना ही स्वस्थ और समरस होगा। विचारों की भिन्नता स्वाभाविक है, लेकिन संवाद के माध्यम से ही उन भिन्नताओं को समझा और सुलझाया जा सकता है। 'विचार सेतु' का उद्देश्य भी यही है—विभिन्न विचारों और दृष्टिकोणों के बीच संवाद का पुल बनना। पत्रिका का नाम ही अपने भीतर एक संदेश छिपाए हुए है। 'विचार' अर्थात सोच और 'सेतु' अर्थात जोड़ने वाला पुल। जब विचारों के बीच सेतु बनता है तब समाज में समझ और सहयोग की भावना बढ़ती है। आज के समय में जब विचारधारात्मक विभाजन की चर्चाएँ अक्सर सामने आती हैं, तब यह आवश्यक है कि संवाद और संतुलित विचार को महत्व दिया जाए।

युवा पीढ़ी : संभावनाओं का आधार

भारत की सबसे बड़ी ताकत उसकी युवा आबादी है। देश की लगभग आधी जनसंख्या युवाओं की है और यही युवा आने वाले समय में भारत की दिशा तय करेंगे। लेकिन युवा शक्ति तभी प्रभावी बनती है जब उसे सही शिक्षा, अवसर और प्रेरणा मिलती है। आज के युवाओं के सामने अवसर भी हैं और चुनौतियाँ भी। तकनीकी क्रांति ने नए रोजगार और नवाचार के रास्ते खोले हैं, लेकिन प्रतिस्पर्धा भी पहले से अधिक बढ़ गई है। इस परिस्थिति में शिक्षा व्यवस्था का दायित्व और बढ़ जाता है। शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने का माध्यम नहीं बल्कि व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया भी है। यदि शिक्षा के साथ संस्कार और सामाजिक चेतना जुड़ जाए तो युवा शक्ति समाज के लिए परिवर्तनकारी भूमिका निभा सकती है।

मीडिया की जिम्मेदारी

आज का समय सूचना का समय है। समाचार और सूचनाएँ कुछ ही क्षणों में पूरे विश्व में फैल जाती हैं। इस स्थिति में मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। मीडिया समाज का दर्पण भी है और मार्गदर्शक भी। लेकिन यह भी सच है कि मीडिया पर आज कई प्रकार के दबाव और चुनौतियाँ हैं। त्वरित खबरों की प्रतिस्पर्धा के बीच कई बार तथ्य और संतुलन प्रभावित हो जाते हैं। ऐसे समय में जिम्मेदार पत्रकारिता की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। पत्रकारिता का मूल उद्देश्य समाज को सही और तथ्यपूर्ण जानकारी देना है।

साहित्यिक और सांस्कृतिक आयोजन : समाज की धड़कन

भारत में साहित्य और संस्कृति केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं है। यहाँ कवि सम्मेलन, साहित्यिक गोष्ठियाँ और सांस्कृतिक महोत्सव समाज की जीवंत परंपरा का हिस्सा हैं। ये आयोजन केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं होते, बल्कि समाज में संवेदना और विचार को जीवित रखते हैं।

समरस समाज की दिशा

भारत की विविधता उसकी शक्ति है। अलग-अलग भाषाएँ, परंपराएँ और संस्कृतियाँ मिलकर इस देश की पहचान बनाती हैं। लेकिन विविधता तभी शक्ति बनती है जब उसके साथ समरसता और सम्मान की भावना जुड़ी हो। आज समाज के सामने यह चुनौती है कि वह अपनी विविधताओं को स्वीकार करते हुए एकता की भावना को मजबूत बनाए। जब समाज में विश्वास और सहयोग की भावना बढ़ती है, तब विकास का मार्ग भी सहज हो जाता है।

विचार से भविष्य का निर्माण

हर युग अपने विचारों से पहचाना जाता है। विचार ही वह शक्ति है जो समाज को दिशा देता है और भविष्य का निर्माण करता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम संवाद, सहिष्णुता और समरसता के मूल्यों को मजबूत करें। 'विचार सेतु' का यह अंक इसी विश्वास के साथ आपके सामने प्रस्तुत है कि विचारों का यह सेतु समाज के विभिन्न वर्गों के बीच समझ और संवाद को मजबूत करेगा। हम अपने सभी पाठकों, लेखकों और सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं, जिनके सहयोग से यह पत्रिका निरंतर आगे बढ़ रही है। आशा है कि यह अंक पाठकों को नए दृष्टिकोण, नए विचार और नई प्रेरणा प्रदान करेगा। क्योंकि अंततः समाज की प्रगति केवल आर्थिक विकास से नहीं बल्कि विचारों की समृद्धि से होती है।

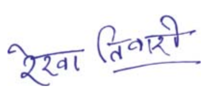

रेखा तिवारी

यूजीसी का मान, शंकराचार्य का अपमान

2027 विस चुनाव का घमासान

शिवा शंकर पाण्डेय

विधानसभा 2027 का चुनाव सन्निकट देख सभी दल चुनावी तैयारी में जुटे हैं। उधर, भाजपा यूजीसी से उपजे असंतोष, स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद विवाद और भीतर ही भीतर उपेक्षा जैसे संकट। ऐसे में भाजपा की यूपी में कैसे होगी चुनावी नैया पार। मुद्दों को खंगालती शिवा शंकर पाण्डेय की रिपोर्ट।

तीन माह पहले 23 दिसंबर को ब्राह्मण विधायकों की बैठक को लेकर उठा तूफान पूरी तरह थम भी न पाया था कि जनवरी महीने में यूजीसी ने खासा बवंडर मचा दिया। फरवरी महीना आते आते प्रयागराज कुंभ मेला में शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद को लेकर बढ़ा बवाल। बटुकों की शिखा (चोटी) उखाड़ने से

लेकर कोर्ट अदालत, यौन आरोप, परस्पर तीखे बयान, फिर शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद का बयान कि वे हजारों साधु संत महात्माओं को एकजुट कर यात्रा निकालेंगे...। इसके पहले भी भाजपा के विधायक सांसद और मंत्री तक को अपनी बात मनवाने के लिए धरने पर बैठना पड़ा। कानपुर देहात से सांसद देवेंद्र सिंह भोले और पूर्व सांसद अनिल शुक्ला वारसी के बीच छिड़ी 'जंग' रही हो या अनिल शुक्ला वारसी की पत्नी प्रतिभा शुक्ला व योगी आदित्यनाथ कैबिनेट में राज्य मंत्री का धरने पर बैठने का प्रकरण, ये भी खूब चर्चा में रहे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के बीच परस्पर विरोधाभास भी भाजपाइयों को कई बार असहज करता रहा है। ताजा घटनाक्रम पर निगाह डालें तो 18 फरवरी को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मुलाकात और 40 मिनट से ज्यादा वार्ता के ठीक दूसरे दिन राज्य के दोनों उप मुख्यमंत्रियों केशव प्रसाद मौर्य और बृजेश पाठक की भी संघ प्रमुख यहां हाजिरी व काफी देर तक हुई वार्ता के कई सियासी निहितार्थ निकाले जा रहे हैं।

बहरहाल, यूपी में बीते तीन महीने लगातार तीन बड़े बड़े बवाल, अच्छा खासा बवंडर उठ खड़ा हुआ है। और, ये सब उस समय है, जब विधानसभा 2027 का चुनाव एकदम सामने खड़ा है। सभी पार्टियां चुनाव को टारगेट कर तैयारी में जुटी हैं। सत्तासीन भारतीय जनता पार्टी एक-एक कदम फूंक फूंक कर रख रही है, वहीं दूसरी तरफ देश की सबसे बड़ी आबादी और राजनीतिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण माना जाने वाला राज्य उत्तर प्रदेश में ऐसे ही अनवरत बवाल दर बवाल। सवाल है कि भाजपा के लिए यूपी का विधानसभा 2027 चुनाव टेढ़ी डगर साबित होने वाला है। यही सवाल भाजपा के शीर्षस्थ नेताओं को मथने लगा है। लखनऊ से प्रमुख नेताओं को दिल्ली बुलाकर मंत्रणा, उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक का लखनऊ आवास बुलाकर सपत्नीक 101 बटुकों का पूजन अर्चन इन बवालों के तोड़ बताए जा रहे हैं।

भाजपा के कोर वोटर ब्राह्मणों की दशा

भारतीय जनता पार्टी के शुरूआती दौर से ही कोर वोटर ब्राह्मण और बनिया रहे हैं। बात ब्राह्मण की करें, तो पिछले कई साल से भाजपा के अंदरखाने में ब्राह्मणों की उपेक्षा के आरोप लगातार लगते रहे हैं। सरकार से लेकर संगठन तक ब्राह्मण नेताओं को दरकिनार करने की आवाज बैठकों से लेकर सार्वजनिक प्लेटफार्म तक प्रभावी अंदाज में उठाए जाते रहे हैं। ब्राह्मणों के इस बेरुखी का अंदाज भाजपा के शीर्षस्थ नेताओं को भी हो चुका है। शायद

इसीलिए 23 दिसंबर को 40 ब्राह्मण विधायकों की बैठक ने सरकार से लेकर भाजपा संगठन को इस कदर असहज किया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के ओएसडी ने फोन कर बैठक की कैफियत पूछी। प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी तक को हड़बड़ी में वार्निंग तक दे देनी पड़ी। अभी ये सब चल ही रहा था कि इधर यूजीसी (उच्च शिक्षण संस्थानों में समानता को बढ़ावा देने के नियम 2026) को लेकर उत्तर प्रदेश में व्यापक बवाल मचा। छात्र, खासकर सवर्ण समाज ने इन नियमों को भेदभाव पूर्ण बताते हुए जगह जगह विरोध प्रदर्शन किया। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में परिवर्तन चौक में हुए विरोध प्रदर्शन के दौरान पुलिस से धक्का मुक्की हुई। जनाक्रोश का आलम यह रहा कि सरकार को कफन व चूड़ी भेंट किए गए। विरोध करने वालों का यह मानना था कि यूजीसी नियम सामान्य वर्ग खासकर सवर्ण बिरादरी के खिलाफ है। उन्हें 'संभावित अपराधी' के रूप में चित्रित करते हैं। यूजीसी कानून के बहाने लखनऊ, कानपुर, गाजीपुर, प्रयागराज जैसे शहरों में व्यापक पैमाने पर विरोध हुआ। छात्रों ने कफन पहन कर और खून से खत लिखा तो सवर्ण संगठनों ने कई जगह विरोध कर अपनी नाराजगी जाहिर की। प्रदर्शनकारियों ने यूजीसी के नियमों को वापस लेने और सवर्ण आयोग के गठन की मांग की। यहां तक कि भाजपा के ही कुछ नेताओं ने इसे 'जहरवाद' की संज्ञा देकर पार्टी से इस्तीफा तक दे दिया। यूपी की राजधानी लखनऊ में 21 फरवरी को सवर्ण मोर्चा के बैनर तले परिवर्तन चौक से हजरतगंज गांधी प्रतिमा तक बड़ी संख्या में लोगों ने विरोध मार्च निकाला। हालांकि सुप्रीमकोर्ट के रोक लगा देने के बाद यूजीसी कानून अभी लागू नहीं हुआ पर

कुंभ मेला में शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद को लेकर बढ़ा बवाल। बटुकों की शिखा (चोटी) उखाड़ने से लेकर कोर्ट अदालत, यौन आरोप, परस्पर तीखे बयान, फिर शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद का बयान कि वे हजारों साधु संत महात्माओं को एकजुट कर यात्रा निकालेंगे...।

इस प्रकरण को लेकर नाराजगी कम नहीं हुई है। फिलहाल, सियासी गलियारों में इस बात की चर्चा शुरू हो गई है कि डबल इंजन की सरकार, बतौर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के राजनैतिक फैसलों के अलावा शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद का कोप, ब्राह्मण बिरादरी के असंतोष जैसे तमाम मुद्दे, अहम सवाल यह कि क्या भाजपा के चुनावी विजय रथ के आगे रोड़े के बजाय पहाड़ बनने जा रहे हैं? शायद इसी बात को भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता भांप चुके हैं।

यूपी भाजपा में शुरू हो गया डैमेज कंट्रोल

केंद्र से लेकर यूपी तक मजबूती के साथ सत्ता में जमी भारतीय जनता पार्टी के सामने इधर लगातार कई चुनौतियां सामने दिखीं। प्रमुख विपक्षी दल के मुखिया अखिलेश यादव कई बार यहां तक कह चुके हैं कि केशव प्रसाद मौर्य सपा में आ जाएं। शायद इन सब बातों को भांपकर यूपी भाजपा के भीतर डैमेज कंट्रोल की कोशिश शुरू कर दी गई है। यूपी में सरकार और पार्टी संगठन के प्रमुख नेताओं को बार बार दिल्ली बुलाया जाना, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत जी का यूपी के भीतर लंबा प्रवास, प्रमुख नेताओं से मुलाकात -वार्ता और मोहन भागवत जी की यूपी में चलने वाली लगातार बैठकें, क्या ये महज संयोग है या विधानसभा 2027 चुनाव की तैयारियों को लेकर पेंच कसने की कवायद? बहरहाल, ज्यादातर लोग इसे भाजपा का यूपी के भीतर डैमेज कंट्रोल ही मानकर चल रहे हैं।

गोपेन्द्र नाथ भट्ट

आईसीसी मेन्स टी-20 वर्ल्ड कप का खिताब जीतकर भारतीय टीम ने यह साबित कर दिया कि वह सीमित ओवरों के इस रोमांचक प्रारूप का विश्व क्रिकेट में असली सम्राट है। लगातार दूसरी बार ट्रॉफी जीतने और अपने देश में मेजबानी करते हुए खिताब जीतने के तीन नायाब रिकॉर्ड भी स्थापित किए है।

टी-20 वर्ल्ड कप जीत भारत बना फटाफट क्रिकेट का सम्राट

फटाफट क्रिकेट के नाम से मशहूर टी-20 प्रारूप में भारत ने एक बार फिर अपनी ताकत का लोहा मनवाते हुए विश्व क्रिकेट में एक नया इतिहास और एक नया कीर्तिमान रच दिया है। रविवार को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में लाखों द बीएमर्शकों की उपस्थिति में आईसीसी मेन्स टी-20 वर्ल्ड कप का खिताब जीतकर भारतीय टीम ने यह साबित कर दिया कि वह सीमित ओवरों के इस रोमांचक प्रारूप का विश्व क्रिकेट में असली सम्राट है। इस प्रारूप में भारत ने तीन बार विश्व विजेता,लगातार दूसरी बार ट्रॉफी जीतने और अपने देश में मेजबानी करते हुए खिताब जीतने के तीन नायाब रिकॉर्ड भी स्थापित किए है। इसके अलावा टेस्ट, 50 ओवर्स के एक दिवसीय क्रिकेट तथा टी- 20 के साथ महिला टेस्ट और वन डे क्रिकेट के विश्व विजेता बन भारत ने क्रिकेट के हर प्रारूप में अपनी बादशाहत की धाक जमाई है। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह, अपने परिवार और पुत्र अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद के अध्यक्ष जयंत शाह और क्रिकेट के हर प्रारूप में भारत को विश्व कप दिलाने वाले सभी कप्तान कपिल देव,एम एस धोनी,रोहित शर्मा आदि अहमदाबाद में टी-20 विश्व कप की इस जीत के साक्षी बने और अहमदाबाद के नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में मौजूद थे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारतीय टीम को इस अभूतपूर्व विजय पर ट्वीट कर एक्स पर अपनी हार्दिक बधाई दी। राजधानी नई दिल्ली सहित पूरे देश में जोरदार जश्न शुरू

हो गया। नई दिल्ली के इण्डिया गेट पर लोगों का उत्साह और उमंग देखने लायक था।

अहमदाबाद में भारत को मिली टी- 20 क्रिकेट के वर्ल्ड कप की इस ऐतिहासिक जीत ने न केवल भारतीय क्रिकेट को नई ऊंचाई दी है, बल्कि करोड़ों भारतीयों के दिलों में गर्व और अपार उत्साह की लहर का संचार भी कर दिया है। टी-20 क्रिकेट में भारत की ताकत का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इस प्रारूप की शुरूआत से ही भारतीय टीम लगातार मजबूत प्रदर्शन करती रही है। 2007 में एमएस धोनी की कप्तानी में भारत ने पहला टी-20 विश्व कप जीतकर दुनिया को चौंका दिया था। उस समय युवा खिलाड़ियों से सजी भारतीय टीम ने यह दिखा दिया था कि क्रिकेट के सबसे छोटे प्रारूप में भी वह बड़े-बड़े दिग्गजों को चुनौती देने की क्षमता रखती है। 2017 और 2024 में भी भारतीय टीम ने विश्व विजेता ट्रॉफी उठाई। वर्तमान टी-20 विश्व कप में भारतीय टीम का प्रदर्शन शुरूआत से ही शानदार रहा टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव के नेतृत्व में खिलाड़ियों ने अनुशासन, आत्मविश्वास और आक्रामक रणनीति के साथ मैदान में उतरकर हर मुकाबले में अपना दम दिखाया। बल्लेबाजी में विस्फोटक अंदाज और गेंदबाजी में सटीक रणनीति और फील्डिंग में बेजोड़ प्रदर्शन कर भारत को हर मैच में बढ़त दिलाई।

सूर्यकुमार यादव के नेतृत्व में भारतीय बल्लेबाजों ने पूरे टूनार्मेंट में आक्रामक और संतुलित खेल का प्रदर्शन किया। शीर्ष क्रम ने तेज शुरूआत दी तो मध्यक्रम ने जिम्मेदारी के साथ पारी को संभाला। वहीं गेंदबाजों ने भी निर्णायक मौकों पर विपक्षी टीमों को दबाव में रखा। तेज गेंदबाजों की गति और स्पिन गेंदबाजों की चतुराई ने विरोधी टीमों की रणनीतियों को ध्वस्त कर दिया। क्षेत्र रक्षण में भी भारतीय टीम ने इस बार अद्धुत प्रदर्शन दिखा अपना कमाल का खेल दिखाया है। इस जीत का सबसे बड़ा संदेश यह है कि भारतीय क्रिकेट अब केवल प्रतिभा पर ही नहीं बल्कि मजबूत रणनीति, फिटनेस और आधुनिक प्रशिक्षण पद्धति पर भी आधारित है। भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने पिछले कुछ वर्षों में घरेलू क्रिकेट और खिलाड़ियों के विकास पर विशेष ध्यान दिया है। इसी का परिणाम है कि भारतीय टीम के पास प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की लंबी कतार है। भारतीय टीम के मैनेजर गौतम गंभीर ने भी अपने आलोचकों का मुँह बंद कर दिया है।

राजस्थान का क्रिकेट की इस महान यात्रा में अविस्मरणीय योगदान रहा है। बीसीसीआई के पूर्व अध्यक्ष राजसिंह डूंगरपुर ने क्रिकेट के हर प्रारूप और प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को आगे लाने की जो पहल की थी, वह आज फलीभूत हो रही है। वर्तमान काल खंड में टी-20 प्रारूप की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है और इस खेल ने क्रिकेट को नई ऊर्जा दी है। तेज गति, रोमांच और अप्रत्याशित परिणामों के कारण यह प्रारूप दुनिया भर में सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है। भारत में तो यह खेल एक उत्सव की तरह मनाया जाता है। आईपीएल जैसी लीग ने भी भारतीय खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनने में बड़ी भूमिका निभाई है। भारत की इस जीत का प्रभाव केवल खेल तक सीमित नहीं है। यह जीत देश के युवाओं को प्रेरणा देती है कि अनुशासन, मेहनत और टीमवर्क के जरिए किसी भी लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। भारतीय टीम की सफलता ने यह भी साबित कर दिया है कि जब प्रतिभा और अवसर का सही मेल होता है तो असंभव भी संभव हो जाता है। अंततः कहा जा सकता है कि टी-20 विश्व कप जीतकर भारत ने फटाफट क्रिकेट में अपनी बादशाहत फिर से स्थापित कर दी है। यह जीत केवल एक ट्रॉफी नहीं बल्कि भारतीय क्रिकेट की निरंतर प्रगति, खिलाड़ियों की मेहनत और देशवासियों के अटूट विश्वास का प्रतीक है। आने वाले वर्षों में भी भारतीय टीम से इसी तरह के शानदार प्रदर्शन की उम्मीद की जा सकती है, जिससे भारत विश्व क्रिकेट में अपनी सम्राट की पहचान को और मजबूत करता रहेगा।

हिंदू सम्मेलन की जमीन पर यूजीसी का बुलडोजर

बद्री नाथ तिवारी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पिछले एक दशक से जिस परियोजना पर चुपचाप, धैर्यपूर्वक और जमीनी स्तर पर काम कर रहा था। हिंदू समाज की एकजुटता पर सबसे गहरा आघात किसी विपक्षी दल ने नहीं, बल्कि स्वयं उसकी राजनीतिक शाखा भाजपा ने किया। हिंदू सम्मेलन संघ के लिए केवल धार्मिक आयोजन नहीं थे। वे दरअसल उस ऐतिहासिक कमी को भरने का प्रयास थे, जिसमें हिंदू समाज जाति,

संघ की हिंदू एकजुटता वाली नीति पर भाजपा की सत्ता-राजनीति का सबसे बड़ा प्रहार

जब संगठन समाज जोड़ रहा था, सत्ता नीति तोड़ रही थी

वर्ग, शिक्षा और अवसरों के आधार पर बिखर गया था। संघ जानता था कि मंदिर, त्योहार और

नारों से आगे बढ़कर यदि हिंदू समाज को जोड़ा जा सकता है, तो वह शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक न्याय के साझा विमर्श से ही संभव है। लेकिन, ठीक इसी समय भाजपा सरकार द्वारा लाया गया नया यूजीसी कानून इस पूरी वैचारिक संरचना पर ऐसा गिरा, जैसे किसी निमार्णाधीन पुल की नींव पर विस्फोट कर दिया गया हो।

हिंदू सम्मेलन : संघ की सबसे बड़ी महत्वाकांक्षी सामाजिक परियोजना

संघ को लंबे समय से यह अहसास था कि हिंदू समाज का सबसे बड़ा संकट बाहरी नहीं, आंतरिक है।ब्राह्मण बनाम दलित, शहरी बनाम ग्रामीण, संस्कृत बनाम अंग्रेजी, निजी बनाम सरकारी शिक्षा–इन विभाजनों ने हिंदुओं को संख्यात्मक बहुलता के बावजूद वैचारिक अल्पसंख्यक बना दिया। इसी पृष्ठभूमि में हिंदू सम्मेलन शुरू हुए। इन सम्मेलनों का संदेश साफ था– 'हिंदू होना किसी जाति या पूजा पद्धति का नाम नहीं, यह एक साझा सभ्यता है।' संघ ने जानबूझकर इन आयोजनों को राजनीतिक मंच से दूर रखा, ताकि समाज में यह संदेश जाए कि यह चुनाव नहीं, चेतना का अभियान है।

भाजपा का यूजीसी कानून : सुधार नहीं, सत्ता का केंद्रीकरण

भाजपा सरकार ने जिस यूजीसी कानून को शिक्षा सुधार कहकर पेश किया, वह असल में केंद्रीकरण और बाजारीकरण का दस्तावेज है। इस कानून ने विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता कमजोर की

कुलपति नियुक्तियों को सत्ता के करीब ले लाया

शिक्षा को संस्कृति से काटकर कौशल बाजार से जोड़ा और भारतीय ज्ञान परंपरा को 'अनुत्पादक' मानकर हाशिये पर धकेला। यह वही भाजपा है जो मंचों से गुरुकुल, वेद, भारतीय ज्ञान प्रणाली की बात करती है, लेकिन नीति बनाते समय वही भाषा बोलती है जो विश्व बैंक और कॉरपोरेट लॉबी को पसंद आती है।

संघ बनाम भाजपा : पहली बार इतना स्पष्ट टकराव

यह भ्रम अब टूट चुका है कि संघ और भाजपा हर मुद्दे पर एकमत हैं। यूजीसी कानून ने यह उजागर कर दिया कि –संघ समाज के दीर्घकालिक संस्कार की सोचता है

भाजपा सत्ता की तात्कालिक जरूरतों की

संघ जहां शिक्षा को संस्कार और संस्कृति का माध्यम मानता है, वहीं भाजपा ने उसे डिग्री, प्लेसमेंट और रैंकिंग तक सीमित कर दिया। यही वह बिंदु है, जहां हिंदू सम्मेलन की आत्मा को सबसे गहरी चोट पहुँची।

दलित-पिछड़ा हिंदू : जिसे जोड़ा जा रहा था, वही छिटकने लगा

संघ के हिंदू सम्मेलन की सबसे बड़ी उपलब्धि थी–दलित और पिछड़े वर्ग की बढ़ती भागीदारी। लेकिन यूजीसी कानून के बाद यही वर्ग सबसे पहले असहज हुआ। कारण साफ है। निजीकरण से आरक्षण अप्रभावी होगा। ग्रामीण और सरकारी शिक्षण संस्थान कमजोर होंगे । अंग्रेजी और महंगी शिक्षा फिर से विशेषाधिकार बन जाएगी

अब सवाल यह है–

जिस हिंदू को संघ मंच पर 'भाई' कह रहा था,

उसी हिंदू को भाजपा नीति में 'ग्राहक' क्यों बना रही है?

संघ की चुप्पी : विवशता या रणनीतिक असहजता?

संघ ने यूजीसी कानून पर न खुला समर्थन किया, न विरोध। यह चुप्पी सामान्य नहीं है–यह असहजता की स्वीकारोक्ति है।

संघ जानता है कि खुला विरोध करने का अर्थ होगा– भाजपा की सरकार को कठघरे में खड़ा करना और अपने ही राजनीतिक प्रयोग पर सवाल उठानालेकिन चुप रहने का अर्थ यह भी है कि संगठन अपने कार्यकर्ताओं को असमंजस में छोड़ रहा है।

हिंदू एकता का सबसे बड़ा विरोधाभास

हिंदू सम्मेलन कहते हैं– 'हम सब एक हैं' यूजीसी कानून कहता है– 'जो बाजार में टिकेगा, वही पढ़ेगा'

यह विरोधाभास केवल वैचारिक नहीं, नैतिक भी है। एक ओर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, दूसरी ओर कॉरपोरेट राष्ट्रवाद।

और दुर्भाग्य यह है कि दोनों के बीच संवाद नहीं, टकराव है। भाजपा की सबसे बड़ी भूल भाजपा ने यह मान लिया कि– हिंदू एकता भावनात्मक मुद्दों से बनी रहेगी शिक्षा जैसे विषय राजनीतिक जोखिम नहीं हैं यही उसकी सबसे बड़ी भूल है। इतिहास गवाह है कि जिसने शिक्षा छोड़ी, उसने भविष्य छोड़ा। विपक्ष की चांदी, संघ की साख पर सवाल यूजीसी कानून ने विपक्ष को वह मुद्दा दे दिया, जो हिंदू सम्मेलन नहीं दे पाए।

अब विपक्ष यह कहने की स्थिति में है–'संघ समाज जोड़ने की बात करता है,

भाजपा उसी समाज के अवसर छीन रही है।'यह हमला राजनीतिक कम, वैचारिक अधिक खतरनाक है। **यह झटका नहीं, चेतावनी है** यूजीसी कानून ने हिंदू सम्मेलन की परियोजना को यह बता दिया कि– यदि नीति और विचार में सामंजस्य नहीं होगा, तो संगठन का श्रम सत्ता की भूलों में नष्ट हो जाएगा। यह केवल संघझभाजपा का आंतरिक मामला नहीं है। **यह हिंदू समाज के भविष्य की दिशा तय करने वाला प्रश्न है–** क्या हिंदू एकता केवल मंचों तक सीमित रहेगी या नीति में भी दिखाई देगी?

(लेखक वरिष्ठ चिंतक, विचारक एवं सामाजिक कार्यकर्ता।)

सियासत के सबसे लचीले रणनीतिकार : हमारे सुशासन बाबू

सुशासन बाबू, पलटूराम, विकास पुरुष, इंजीनियर साहब, मिस्टर क्लीन, किंगमेकर तो कभी मौसम वैज्ञानिक–ये सभी उपनाम उस इंसान से जुड़े हैं, जिसने अपने लंबे सियासी सफर में बिहार की राजनीति को कई बार नई दिशा दी। सत्ता के समीकरण बदले और गठबंधन राजनीति के सबसे दिलचस्प अध्याय लिखे।

भास्कर मिश्र

हम बात कर रहे हैं राजनीति के सबसे लचीले किरदार की, जिनका नाम है नीतीश कुमार। करीब 4 दशक से अधिक के राजनीतिक जीवन में उन्होंने आंदोलन की राजनीति से लेकर केंद्र और राज्य की सत्ता तक का सफर तय किया। कभी सुशासन और विकास की छवि के कारण सराहे गए तो कभी बार-बार बदलते राजनीतिक समीकरणों के कारण आलोचनाओं के केंद्र में भी रहे। बिहार की समकालीन राजनीति को समझने में उनका नाम एक ऐसे नेता के रूप में दर्ज है, जिसकी पहचान उपलब्धियों, प्रयोगों और विवादों–तीनों से मिलकर बनी है। बिहार की राजनीति में लंबे समय तक केंद्रीय भूमिका निभाने वाले वरिष्ठ नेता नीतीश कुमार एक बार फिर चर्चा के केंद्र में हैं। करीब दो दशकों तक राज्य की सत्ता पर प्रभाव बनाए रखने वाले नीतीश कुमार को भारतीय राजनीति में 'गठबंधन युग के सबसे लचीले रणनीतिकारो' में गिना जाता है। बदलते राजनीतिक समीकरणों के बीच उनका राजनीतिक सफर इस बात का उदाहरण माना जाता है कि किस तरह क्षेत्रीय नेतृत्व, राष्ट्रीय राजनीति के दबावों और सामाजिक समीकरणों के बीच संतुलन साधता है। दरअसल, बिहार की राजनीति को पिछले तीन दशकों में दो बड़े चरणों में देखा जाता है। पहला चरण सामाजिक न्याय की धुरी रहा, जिसकी अगुवाई लालू यादव ने की। तो दूसरा चरण प्रशासनिक सुधार और विकास की राजनीति का रहा, जिसका चेहरा बने नीतीश कुमार।

आंदोलन की राजनीति से सत्ता तक

एक मार्च, 1951 को नालंदा जिले के बख्तियारपुर में जन्मे नीतीश कुमार का राजनीतिक सफर 1970 के दशक में शुरू हुआ। उस समय देश में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चल रहा आंदोलन कई युवाओं के लिए राजनीति में प्रवेश का मार्ग बना। इसी आंदोलन से आगे चलकर बिहार के कई बड़े नेता उभरे, जिनमें लालू प्रसाद यादव व रामविलास पासवान भी शामिल थे। नीतीश कुमार ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के बाद कुछ समय तक सरकारी सेवा में काम किया, लेकिन जल्द ही सक्रिय राजनीति में आ गए। 1985 में वे पहली बार बिहार विधानसभा पहुंचे और 1989 में लोकसभा के लिए चुने गए।

केंद्र से राज्य की राजनीति तक

1990 के दशक में उन्होंने राष्ट्रीय राजनीति में भी अहम भूमिका निभाई। अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली सरकार में वे रेल मंत्री और कृषिमंत्री रहे। रेलमंत्री के रूप में 1999 में हुई एक रेल दुर्घटना के बाद नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए उनका इस्तीफा देना भारतीय राजनीति में जवाबदेही के उदाहरण के रूप में अक्सर उल्लेखित किया जाता है। रेलमंत्री रहते हुए उन्होंने घाटे में चलने वाली रेलवे को फायदे में लाने के लिए कई तरह के प्रयास किए। इसमें रेलवे इंफ्रास्ट्रक्चर का नवीनीकरण भी शामिल है।

2005: बिहार में सत्ता परिवर्तन

साल 2005 बिहार की राजनीति में बड़ा मोड़ साबित हुआ। उस समय राज्य में लंबे समय तक लालू प्रसाद यादव और बाद में राबड़ी देवी के नेतृत्व वाली सरकार रही थी। कानून-व्यवस्था और विकास को लेकर उठ रहे सवालों के बीच हुए चुनाव में सत्ता परिवर्तन हुआ और नीतीश कुमार मुख्यमंत्री बने। उन्होंने प्रशासनिक सुधार, सड़क निर्माण, शिक्षा व महिला सशक्तिकरण जैसे मुद्दों को शासन की प्राथमिकता में रखा।

नीतीश के शासन की प्रमुख पहल

सरकार के दौरान कई योजनाओं ने राष्ट्रीय स्तर पर भी ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने छात्राओं के लिए साइकिल योजना और छात्रवृत्ति योजना शुरू की। पंचायतों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण दिया। ग्रामीण सड़कों और पुलों के निर्माण पर जोर देने के साथ-साथ कानून-व्यवस्था सुधार के लिए फास्ट-ट्रैक अदालतों की व्यवस्था बनाई। इन पहलों के कारण बिहार में शिक्षा और बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिले।

गठबंधन बदलने की राजनीति

नीतीश कुमार की राजनीति की सबसे अधिक चर्चा उनके बदलते राजनीतिक गठबंधनों को लेकर होती रही है। 2013 में उन्होंने नरेंद्र मोदी को भाजपा का प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किए जाने के बाद राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन से अलग होने का निर्णय लिया। इसके बाद 2015 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने लालू प्रसाद यादव व राहुल गांधी की पार्टी इंडियन नेशनल कांग्रेस के साथ महागठबंधन बनाकर चुनाव जीता। 2017 में यह गठबंधन टूट गया और वे फिर भाजपा के साथ सरकार बनाने लगे। बाद में 2022 में उन्होंने भाजपा से अलग होकर विपक्षी दलों के साथ नई सरकार बनाई।

सुशासन बाबू की उपलब्धियां और आलोचनाएं

नीतीश कुमार को प्रशासनिक सुधारों और सामाजिक योजनाओं के लिए सराहा गया, लेकिन उनकी राजनीति आलोचनाओं से भी घिरी रही। आलोचकों का कहना है कि बिहार में बुनियादी ढांचे और शिक्षा के क्षेत्र में सुधार हुए, लेकिन औद्योगिक विकास और बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन की गति अपेक्षित स्तर तक नहीं बढ़ सकी। इसके अलावा 2016 में लागू शराबबंदी नीति को लेकर भी लगातार राजनीतिक और प्रशासनिक बहस होती रही है।

बदलती राजनीति व भविष्य की दिशा

नीतीश कुमार के द्वारा राज्यसभा का नामांकन दाखिल करने के बाद एक बार फिर से वह चर्चा में हैं। इसका असर बिहार की सत्ता और राष्ट्रीय राजनीति–दोनों स्तरों पर दिखाई दे सकता है। राज्य स्तर पर यह परिवर्तन नेतृत्व के नए चरण की शुरूआत माना जाएगा, क्योंकि लंबे समय से मुख्यमंत्री पद के केंद्र में रहे नीतीश कुमार के पीछे हटने से सत्ता संचालन की जिम्मेदारी दूसरे नेताओं के हाथ में जाएगी और जनता दल (यूनाइटेड) को भी अपने संगठनात्मक ढांचे और नेतृत्व को पुनर्संतुलित करना पड़ेगा।

वहीं, राष्ट्रीय स्तर पर राज्यसभा में उनकी मौजूदगी विपक्षी राजनीति और गठबंधन समीकरणों में अनुभव आधारित भूमिका को मजबूत कर सकती है, क्योंकि उन्हें लंबे समय से क्षेत्रीय दलों के बीच संवाद और राजनीतिक संतुलन बनाने वाले नेता के रूप में देखा जाता रहा है।

नीतीश का सियासी सफर महत्वपूर्ण

करीब दो दशकों तक बिहार की सत्ता के केंद्र में रहने वाले नीतीश को राजनीतिक विश्लेषक 'गठबंधन युग का व्यावहारिक नेता' मानते हैं। उन्होंने सामाजिक न्याय की राजनीति और विकास के एजेंडे के बीच संतुलन साधने की कोशिश की। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बिहार की समकालीन राजनीति को समझने के लिए नीतीश कुमार का दौर एक महत्वपूर्ण अध्याय बना रहेगा–जहां सत्ता, सामाजिक समीकरण और गठबंधन रणनीति लगातार एक-दूसरे को प्रभावित करते रहे।

भाजपा का रथ
बिहार के रास्ते चला प. बंगाल

मानवेंद्र शर्मा

पूर्वी भारत की राजनीति में निर्णायक मोड़

भारतीय राजनीति में यदि किसी क्षेत्र ने पिछले दो दशकों में सबसे अधिक वैचारिक, सामाजिक और चुनावी उथल-पुथल देखी है, तो वह है पूर्वी भारत। इस भूभाग में बिहार और पश्चिम बंगाल केवल दो राज्य नहीं, बल्कि दो भिन्न राजनीतिक संस्कृतियों, सामाजिक संरचनाओं और वैचारिक परंपराओं के प्रतिनिधि रहे हैं। आज जब भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का राजनीतिक रथ बिहार की पगडंडियों से होता हुआ पश्चिम बंगाल की ओर बढ़ रहा है, तो यह यात्रा मात्र चुनावी नहीं, बल्कि वैचारिक विस्तार, संगठनात्मक परिपक्वता और सामाजिक पुनर्संयोजन की यात्रा बन चुकी है।

बिहार : प्रयोगशाला से प्रवेश द्वार तक

भाजपा के लिए बिहार हमेशा से एक प्रयोगशाला रहा है। यहां गठबंधन - राजनीति, जातीय समीकरण और सामाजिक न्याय के विमर्श ने राष्ट्रीय राजनीति को दिशा दी। 1990 के दशक में जब लालू प्रसाद यादव के सामाजिक न्याय आंदोलन ने बिहार की राजनीति को नई भाषा दी, तब भाजपा को यहां अपने लिए स्थान बनाना आसान नहीं था।

हालांकि, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की वैचारिक जमीन, शहरी मध्यवर्ग और व्यापारी समाज में भाजपा की पैठ धीरे-धीरे मजबूत होती गई। 2005 के बाद नीतीश कुमार के साथ गठबंधन ने भाजपा को सत्ता का स्वाद भी चखाया, लेकिन 2013 में गठबंधन टूटने के बाद पार्टी ने आत्मनिर्भरता की राह पकड़ी। 2014 के लोकसभा चुनावों में भाजपा ने बिहार में अभूतपूर्व सफलता दर्ज की। यह वही क्षण था जब पार्टी नेतृत्व को यह अहसास हुआ कि बिहार केवल लक्ष्य नहीं, बल्कि पूर्वी भारत के लिए प्रवेश द्वार है। 2019 में यह विश्वास और मजबूत हुआ।

जाति की राजनीति से परे नई सामाजिक इंजीनियरिंग

बिहार की राजनीति को समझे बिना बंगाल की यात्रा अधूरी है। भाजपा ने बिहार में यह प्रयोग किया कि केवल जाति नहीं, बल्कि आकांक्षा की राजनीति भी मतदाताओं को जोड़ सकती है।

गरीब कल्याण योजनाएं
महिला सशक्तिकरण
शहरी-ग्रामीण बुनियादी ढांचा
राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक अस्मिता

इन 4 स्तंभों पर भाजपा ने बिहार में अपना आधार विस्तारित किया। यही मॉडल अब पश्चिम बंगाल में दोहराया जा रहा है, लेकिन स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप संशोधन के साथ।

पश्चिम बंगाल : वामपंथ से तृणमूल तक

पश्चिम बंगाल की राजनीति लंबे समय तक वामपंथी विचारधारा के इर्द-गिर्द घूमती रही। 34 वर्षों का वाम शासन भारत के राजनीतिक इतिहास में अद्वितीय रहा। 2011 में ममता बनर्जी के नेतृत्व में तृणमूल कांग्रेस का उदय वामपंथ के पतन का संकेत था, लेकिन इससे राज्य की राजनीति की वैचारिक रिक्तता पूरी नहीं हो सकी। ममता बनर्जी ने जनभावनाओं, क्षेत्रीय अस्मिता और केंद्र विरोध की राजनीति से सत्ता संभाली, किंतु सुशासन, उद्योग और रोजगार के प्रश्न अनुत्तरित ही रहे। इसी रिक्तता में भाजपा ने प्रवेश किया।

बिहार से बंगाल तक : संगठन का विस्तार

भाजपा का रथ जब बिहार से बंगाल की ओर बढ़ता है, तो उसके साथ केवल नेता या भाषण नहीं चलते, बल्कि चलता है एक विस्तृत संगठन तंत्र।

बूथ स्तर की संरचना
पन्ना प्रमुख मॉडल
आईटी और सोशल मीडिया नेटवर्क

प्रवासी बिहारियों और उत्तर भारतीय समाज का समर्थन

बिहार के सीमावर्ती जिलों–पूर्णिया, कटिहार, किशनगंज–से लेकर बंगाल के मालदा, मुर्शिदाबाद और उत्तर 24 परगना तक, भाजपा ने सीमापार सामाजिक नेटवर्क तैयार किया है। यही नेटवर्क रथ की असली शक्ति है।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद बनाम क्षेत्रीय अस्मिता

भाजपा की राजनीति का केंद्रीय तत्व है सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, जबकि पश्चिम बंगाल की राजनीति लंबे समय तक क्षेत्रीय अस्मिता और बौद्धिक श्रेष्ठता के दावे पर टिकी रही।

बिहार में भाजपा ने यह सिद्ध किया कि राष्ट्रवाद और क्षेत्रीय गर्व परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हो सकते हैं। बंगाल में यही प्रयोग 'जय श्रीराम'बनाम 'बंगाली अस्मिता' के विमर्श में दिखाई देता है। हालांकि आलोचकों का कहना है कि भाजपा का यह विमर्श कभी-कभी ध्रुवीकरण को बढ़ावा देता है, लेकिन समर्थकों का तर्क है कि यह लंबे समय से दबे हुए सांस्कृतिक स्वर को मुखर करता है।

अल्पसंख्यक राजनीति और भाजपा की चुनौती

बिहार और बंगाल दोनों ही राज्यों में अल्पसंख्यक मतदाता निर्णायक भूमिका निभाते हैं। बिहार में भाजपा ने सहयोगी दलों और विकास के एजेंडे के माध्यम से इस चुनौती को संतुलित किया।

बंगाल में यह चुनौती कहीं अधिक जटिल है। यहां तृणमूल कांग्रेस का अल्पसंख्यक समर्थन ठोस है। भाजपा का प्रयास है कि वह सीधे ध्रुवीकरण के बजाय लाभार्थी राजनीति और राष्ट्रव्यापी पहचान के जरिए इस वर्ग में सेंध लगाए।

नेतृत्व का सवाल : दिल्ली से दीदी तक

बिहार में भाजपा ने स्थानीय नेतृत्व को उभारने के साथ-साथ केंद्रीय नेतृत्व की छवि का उपयोग किया। पश्चिम बंगाल में भी यही रणनीति अपनाई जा रही है। नरेंद्र मोदी और अमित शाह के नेतृत्व को पार्टी अपनी सबसे बड़ी पूंजी मानती है। इसके मुकाबले ममता बनर्जी स्वयं को बंगाल की रक्षक के रूप में प्रस्तुत करती हैं। यह संघर्ष केवल दलों का नहीं, बल्कि केंद्रीय बनाम क्षेत्रीय नेतृत्व का भी है।

2026 और आगे : रथ की दिशा क्या बदलेगी?

भाजपा का रथ अभी मंज़िल पर नहीं पहुंचा है। 2021 के विधानसभा चुनावों में पार्टी ने बड़ी छलांग लगाई, लेकिन सत्ता से दूर रही। यह हार भी उसके लिए सीख बन गई।बिहार के अनुभव बताते हैं कि भाजपा दीर्घकालिक रणनीति में विश्वास रखती है। बंगाल में भी वह चुनाव दर चुनाव अपनी जमीन मजबूत कर रही है।

निष्कर्ष : एक राजनीतिक यात्रा, एक वैचारिक संघर्ष

भाजपा का बिहार के रास्ते पश्चिम बंगाल की ओर बढ़ता रथ केवल सत्ता की यात्रा नहीं है। यह–**वामपंथी विरासत को चुनौती देने का प्रयास है**

क्षेत्रीय राजनीति को राष्ट्रीय विमर्श से जोड़ने की कोशिश है

और पूर्वी भारत को राजनीतिक केंद्र में लाने की रणनीति है

यह रथ कहां पहुंचेगा, यह भविष्य तय करेगा। लेकिन इतना तय है कि इस यात्रा ने बिहार और पश्चिम बंगाल–दोनों की राजनीति को स्थायी रूप से बदल दिया है।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक है)

गठबंधन को दूर से नमस्ते

अकेले ही चुनाव लड़ेगी बसपा

दीपक तिवारी

विधानसभा 2027 चुनाव की तैयारियों में जुटी बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने इस बार अकेले ही चुनावी मैदान में उतरने का फैसला कर सियासी खेमों में हलचल मचा दी है। निष्क्रिय और थके चेहरों को हटाकर ऊजार्वान युवाओं को जिम्मेदारी सौंपी गई है। राष्ट्रीय संगठन के पदाधिकारी की जिम्मेदारियों में महत्वपूर्ण बदलाव कर एक बार फिर आकाश आनंद के श्वससुर को बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गई। आकाश के श्वसुर व पूर्व राज्यसभा सांसद अशोक सिद्धार्थ को चार राज्यों की जिम्मेदारी मिली है। अशोक सिद्धार्थ को दिल्ली, गुजरात, छत्तीसगढ़ और केरल जैसे राज्यों का प्रभारी बनाया गया है। उधर, पार्टी के मुस्लिम चेहरे माने जाने वाले नौशाद अली का भी कद बढ़ाया गया है। नौशाद को यूपी के चार मंडल कानपुर, लखनऊ, आगरा और मेरठ की जिम्मेदारी सौंपी गई है। बसपा प्रमुख मायावती के इस फेरबदल के दौरान रामजी गौतम का कद छोटा किया गया है। पहले रामजी गौतम एक नंबर पर गिने जाते थे अब यह ओहदा अशोक सिद्धार्थ को सौंपा गया है। रामजी गौतम से दिल्ली, मध्य प्रदेश, झारखंड और बिहार की जिम्मेदारी वापस लेते हुए उन्हें महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश व तमिलनाडु राज्य का प्रभार दिया गया है। गौरतलब है कि राजाराम के पास पहले महाराष्ट्र था, अब उन्हें मध्य प्रदेश, बिहार व झारखंड राज्य का प्रभारी बनाया गया है। पूर्व सांसद गिरीश चंद को उत्तराखंड और सुमित सिंह को राजस्थान का प्रभारी नियुक्त किया गया है।

यूपी के 18 मंडल प्रभारी के कार्यक्षेत्र में बदलाव

बसपा प्रमुख मायावती ने संगठन को मजबूत करने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश के 18 मंडल प्रभारी की जिम्मेदारी में बदलाव किया है। समझा जा रहा है कि पार्टी ने नौशाद अली को प्रमुख मुस्लिम चेहरे के तौर पर आगे बढ़ाया है। नौशाद अली को चार मंडलों की जिम्मेदारी देना इसी रणनीति का संकेत माना जा रहा है। नौशाद अली को सौंपे गए यह चारों मंडल राजनीतिक रूप से बसपा में काफी अहम माने जाते हैं। बसपा सुप्रीमो का यह कदम संगठन में नई ऊर्जा लाने और विभिन्न क्षेत्रों में प्रभाव बढ़ाने की दिशा में उठाया गया कदम माना जा रहा है। पार्टी मुखिया मायावती ने 2027 में उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव और अन्य राज्यों में पार्टी की स्थिति मजबूत करने के उद्देश्य से संगठन में यह बदलाव किया है। इससे पहले मायावती ने पार्टी के भीतर बूथ और सेक्टर स्तर तक पुनर्गठन का फैसला लिया था इसमें 50 फीसद युवाओं को मौका देने और कुछ अहम पदों जैसे दो-दो जिला प्रभारी की व्यवस्था को समाप्त करने का निर्णय शामिल था। वर्ष 2027 में यूपी में होने जा रहे विधानसभा चुनाव में 'मिशन 2027' को सफल बनाने की रणनीति का इसे अहम हिस्सा माना जा रहा है। समझा जा रहा है कि बसपा अपने पारंपरिक वोट बैंक दलित, पिछड़े और अल्पसंख्यक वर्ग को मजबूत करने के साथ-साथ अन्य वर्गों में भी पैठ बनाने की कोशिश में जुटी है।

After Iran:
America's Next Steps

What happens after the shooting stops? This is Washington, DCls main topic of conversation in the wake of Epic Fury annihilating Iranls leadership. The answer is fundamental to the balance of President Donald Trumpls Administration. What follows removing Venezuelan President Nicolas Maduro? What is next in Iran? What happens if the Cuban Communists fall?

America has shown the world that it is the most formidable military power in history. Unfortunately, during the 21st century, America has also shown its ability to lose the peace after winning the war. With the end of the Cold War, America guiding nations toward pro-West free societies has ranged from the kgoodl, to the kbadl, to the kuglyl.

SOVIET EMPIRE

The fall of the Berlin Wall on November 9, 1989, marked the end of 72 years of tyranny for Russia and many kcaptivel nations. The countries of the USSR, the Baltics, and Eastern Europe had viable opposition elements. Most Warsaw Pact nations were viable democracies before being conquered by the Nazis and Soviets.

Credible leaders, such as Polandls Lech Walesa and the Czech Republicls Vaclav Havel, were ready to step in. Dissident movements like Solidarity and Samizdat provided a core of policy and political activists to fill the power vacuum as Eastern European leaders fell.

The United States did not knation buildl. It offered important support to the emerging leaders who were shaking off generations of oppression.

Bipartisanship dominated this effort. The Clinton State Department and Speaker Newt Gingrich hosted delegations from the new nations to personally see Congress in action. Prime Ministers, General Secretaries, and Parliamentary leaders spent days being mentored by the Clerk of the House and the Housels Chief Administrative Officer on how voting, legislative processes, and constituent services could be adopted to their respective settings.

Harvard Universityls Kennedy School of Government, under a State Department contract, held week-long training sessions for Members of various Parliaments. Senators, Members of Congress, and the Housels Chief Administrative Officer conducted these interactive seminars to provide real world, hands-on, insights on how to effectively represent their countryls interests while managing debate and opposing views.

The European Union stepped in to help align legal practices and guide the new nations into compliance and ultimately membership in the European Union (EU). Nonprofits, such as the Atlantic Council and The European Institute facilitated dialogue with EU leaders and regional stakeholders. European Ambassadors, posted both the U.S. and in Eastern Europe, served as coaches and mentors to their counterparts.

AFGHANISTAN

The successes of Eastern Europe were totally lost on the Neo-Conservatives (NeoCons) that dominated the inner circles of President George W. Bush.

Afghanistan was a feudal society, divided among villages elders, clergy, and warlords, all owing titular loyalty to the Shah. Mohammadzai tribal leaders ruled Afghanistan for 155 years. The last Shah was toppled in a Sovietbacked coup in April 1978.

What followed were years of unrest. This included civil war, the assassination of the Soviet puppet leader, and the full-scale invasion and occupation of the country by Soviet troops in December 1979.

A long guerilla war was waged by the pro-West Northern Alliance and Islamist factions known as the Mujahideen. Eventually, the most radical of the factions, the Taliban, dominated the Mujahideen.

The Soviet withdrawal on April 14, 1988, left an uneasy coalition government between the Northern Alliance and the Taliban. The leader of the Northern Alliance was assassinated days before the 9-11 attack on America. These events consolidated Taliban control but also led to the United States toppling the regime in December 2001.

The U.S. chose to knation buildl. Ignoring history and culture, Bush officials installed Hamid Karzai in December 2001, after the Taliban government was overthrown. Karzai had been the CIAls kpaymasterl for moving funds to Afghan guerillas. He would prove to be corrupt and untrustworthy, selling the countryls mineral rights to China for $40 million to his overseas bank accounts.

IRAQ

In 2003, Bushls Neocons waged a war based on highly questionable intelligence. They proceeded to line their pockets with billions in bogus contracts while wrecking the country. The U.S. likes to establish highly centralized governments. This ignores the federal system and local governance that made America a success. Partly, centralization is lazy. Having everything inside the highly fortified Baghdad kGreen Zonel meant diplomats, bureaucrats, and contractors could avoid learning anything about the real situation and not leave the comforts of Western food and entertainment.

Unfortunately, this was the recipe for disaster. Rulers, going back to 1639, understood that Iraq was three separate nations: the Kurds in the north; the Shiites along the coast; and the Sunnis in the centre. The British bundled Iraq together after the First World War to consolidate their hold through a puppet King. This fiction fell apart in 1958 when the Balath Party took control and continued to rule a contrived unitary state. Saddam Hussein emerged as dictator in 1988.

The 2003 war toppled Hussein, ushering in 20 years of waste, fraud, abuse. Instead of pursuing a federal system, Bush occupation officials forced a strong unitary state. It was inevitable that the three historic areas would bridle at this contrivance. The most tragic were the Kurds. They had enjoyed semi-independence with the establishment of a kno fly zonel over their region since the 1991 war. They had oil and a strong traditional governance structure. They reached out to Western companies to help develop their lands and were crushed by the U.S. State Department.

THE FUTURE

Venezuela has a viable opposition movement that had the last election stolen. It has a Nobel Prize winner, María Corina Machado, as its titular head. Trump seems content to let Interim President Delcy Rodriguez do the heavy lifting of steering the country back to credibility. Her public statements distance her from kWashingtonls Ordersl, but her actions display begrudging cooperation. Behind the scenes kcarrots and sticksl are probably guiding the relationship. What happens next is going to be driven by internal forces, with the U.S. incentivizing a pro-West and free society outcome.

Iran has a viable opposition inside and outside the country. This includes the extensive Iranian diaspora residing in the United States and other countries. Just as Epic Fury started, Maryam Rajavi, the President-elect of the NCRI, announced the formation of a Provisional Government by the NCRI to transfer sovereignty to the people of Iran and establish a Democratic Republic based on a long established ten-point plan.The Ten-Point Plan was presented by Maryam Rajavi in December 2006 at a session of the Council of Europe.

The NCRIls plan for the future is, ka pluralistic republic based on the separation of religion and state, gender equality, the abolition of the death penalty, peace, coexistence, the elimination of double oppression against Iranls ethnic and national minorities, and a non-nuclear Iranl. This well-organized effort, along with the possible symbolic national leader, Crown Prince Reza Pahlavi, could quickly fill the void as the current regime is toppled. There truly is hope after the bombs…as long as Trump and his team learn from the past.

(Anup Singh)

राज्यनामा

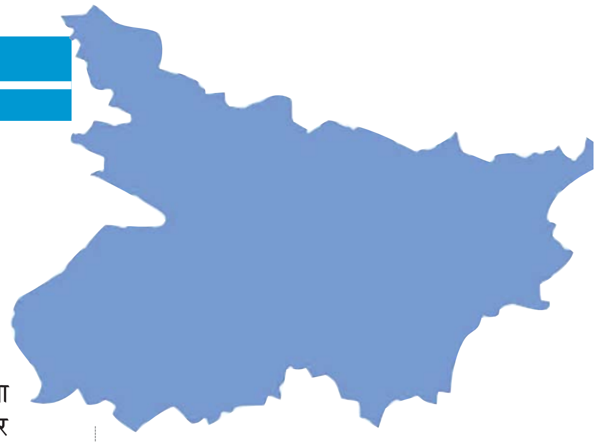

बिहार

बदल रहा है नजरिया

देश की राजनीति में बिहार की राजनीति हमेशा से महत्वपूर्ण रही है। यहां के राजनीतिक घटनाक्रम न केवल राज्य बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रभाव डालते हैं। मौजूदा समय में बिहार की राजनीति कई नए समीकरण, राजनीतिक गठबंधन और मुद्दों के कारण चर्चा में है। सत्ता और विपक्ष के बीच लगातार राजनीतिक बयानबाजी, विकास के मुद्दे, जातीय समीकरण और आगामी चुनाव की तैयारी आदि बिहार राज्य की राजनीति को गतिशील बनाए हुए हैं। बिहार की राजनीति में विकास का मुद्दा प्रमुख है। इसके बावजूद शिक्षा स्वास्थ्य सड़क और उद्योग जैसे अन्य भी कई महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। इन क्षेत्रों में सुधार के लिए सरकार की कई योजनाएं चल रही है। उधर विपक्ष का आरोप है कि इन योजनाओं का लाभ आम जनता तक पूरी तरह नहीं पहुंच पा रहा है। राज्य में उद्योग की कमी और निवेश की जरूरत भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा विपक्षी दलों ने बना रखा है। गठबंधन की राजनीति, जातीय समीकरण, विकास के मुद्दे और राष्ट्रीय स्तर की राजनीतिक रणनीतियां - इन सभी का प्रभाव बिहार राज्य की राजनीति पर साफ दिखाई देता है। आने वाले समय में या देखना दिलचस्प होगा कि बिहार की राजनीति किस दिशा में आगे बढ़ती है और कौन से मुद्दे जनता के बीच सबसे ज्यादा प्रभाव डालते हैं।

डॉ. चंद्रकांत भट्ट

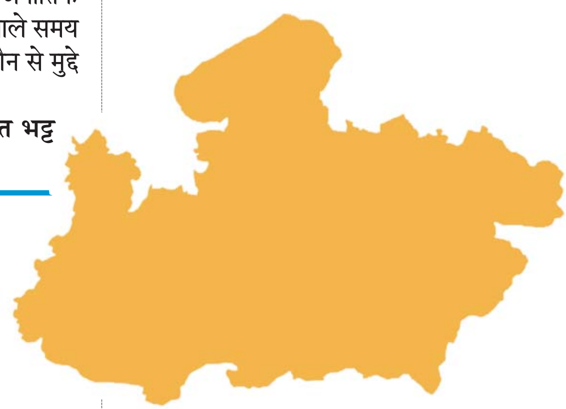

मध्य प्रदेश

ई सन्नाटा काहे है भाई

मध्य प्रदेश की पॉलिटिक्स एक बार फिर सियासी - सन्नाटे के दौर से गुजर रही है। कुछ लोग इसे राजनीति का 'संक्रमण काल' भी बता रहे हैं। लंबे समय तक मध्य प्रदेश जैसे प्रमुख राज्य की राजनीति का चेहरा रहे शिवराज सिंह चौहान के मुख्यमंत्री पद से हटने और केंद्र की भूमिका में चले जाने के बाद ऐसे कई सवाल उठाए जाने लगे हैं। लंबे समय तक राज्य की राजनीति का प्रमुख चेहरा रहे शिवराज सिंह चौहान के मुख्यमंत्री पद से हटने और उनके केंद्र की राजनीति में चले जाने के बाद सत्ता की कमान मोहन यादव के हाथ आ गई। यह बदलाव सिर्फ चेहरे का नहीं, बल्कि सत्ता संतुलन, संगठनात्मक शक्ति और राजनीतिक दिशा बदलने का भी रहा। उसी समय ये भी कयास लगाए जा रहे थे कि क्या यह परिवर्तन केवल पीढ़ी के बदलाव का है या मध्य प्रदेश की राजनीति में नई शक्ति संतुलन की शुरूआत ?

करीब डेढ़ दशक तक मुख्यमंत्री रहे शिवराज सिंह चौहान ने राज्य में एक विशिष्ट राजनीतिक शैली विकसित की जनसंवाद कल्याणकारी योजनाओं की आक्राामक ब्रांडिंग और ग्रामीण मतदाताओं से सीधे जुड़ाव उनकी पहचान रही। शिवराज सिंह चौहान के केंद्र की राजनीति में चले जाने के बाद मध्य प्रदेश की राजनीति में एक अजीब सा सन्नाटा छाया हुआ है।

सुमित ओरछा

आवश्यकता है
विचार सेतु
द्विभाषी राष्ट्रीय पत्रिका
के लिए राज्य, मंडल, जिला स्तर पर संवाददाता, ब्यूरो प्रमुख एवं प्रतिनिधि की तथा विज्ञापन एवं मार्केटिंग के लिए भी कर्मठ युवक युवतियों की आवश्यकता है। संपर्क करें :
9415189919, 9598163216, 7007044100
E-mail – vicharsetu2024@gmail.com
vicharsetumagzine@gmail.com
Website – www.vicharsetu.com

राज्यनामा

दिल्ली

दिल्ली में दिल्लगी

देश की राजधानी खासकर, दिल्ली राज्य की राजनीति केवल स्थानीय स्तर पर ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय राजनीति पर भी अच्छा खासा असर पैदा करती है। दिल्ली राज्य के कथित शराब घोटाला कांड ने पूरे देश दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचा है। वर्ष 2021-22 में दिल्ली सरकार ने नई आबकारी नीति लागू की थी जिसका उद्देश्य शराब बिक्री की व्यवस्था को अधिक पारदर्शी और व्यवस्थित बनाना बताया गया था। कुछ दिनों बाद इस नीति को लेकर विपक्ष ने केजरीवाल सरकार पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाए। मामले की जांच केंद्रीय जांच एजेंसियों द्वारा शुरू की गई। जांच में सीबीआई और ईडी जैसी एजेंसियों को सक्रिय कर दिया गया। कई नेताओं से पूछताछ हुई और परस्पर राजनीतिक बयानबाजी भी तेज हो गई। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उनकी पार्टी (आम आदमी पार्टी) का कहना है कि यह मामला राजनीतिक प्रतिशोध के तहत उठाया गया है, जबकि विपक्षी दल भारतीय जनता पार्टी द्वारा इस मामले को भ्रष्टाचार का उदाहरण बताते हुए सरकार पर लगातार हमला किया जा रहा है। जानकारों का कहना है कि अगर इन विवादों का समाधान नहीं हुआ तो दिल्ली राज्य की राजनीति में टकराव और बहस का दौर आगे भी जारी रहेगा।

काशी शर्मा, राज्य प्रतिनिधि दिल्ली

झारखंड

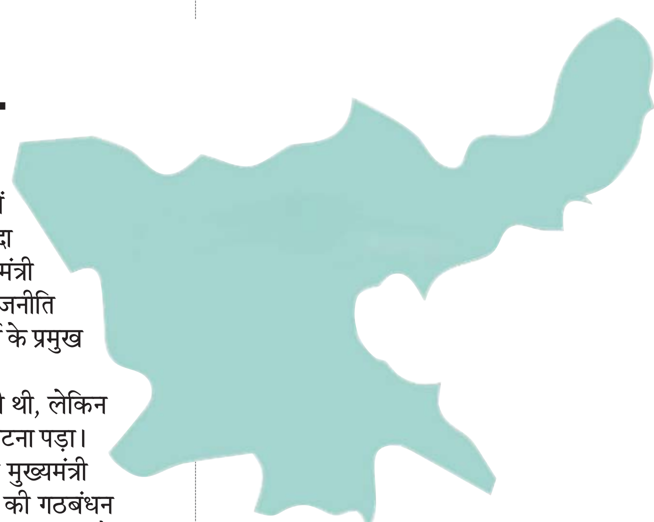

समय सियासत और सक्रियता

पूर्वी भारत का महत्वपूर्ण राज्य झारखंड सियासी गतिविधियों के कारण इन दिनों चर्चा में है। सत्ता परिवर्तन, गठबंधन की रणनीति और आगामी चुनाव पर ज्यादा फोकस है। इस राज्य में इन दिनों राजनीतिक गतिविधियां तेज हो गई हैं। मुख्यमंत्री पद में बदलाव और राजनीतिक दलों के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने झारखंड की राजनीति को दिलचस्प बना दिया है। राज्य के सत्ता की बागडोर पहले झारखंड मुक्ति मोर्चा के प्रमुख हेमंत सोरेन के हाथ में थी।

उनकी पार्टी कांग्रेस तथा अन्य दलों के साथ गठबंधन में सरकार चला रही थी, लेकिन कानूनी अड़चन और राजनीतिक परिस्थितियों के चलते उन्हें मुख्यमंत्री पद से हटना पड़ा। इसी के बाद झारखंड की राजनीति में नया मोड़ आ गया। चौपाई सोरेन यहां के मुख्यमंत्री बन गए उनके मुख्यमंत्री बनने के बाद सरकार ने यह संदेश देने की कोशिश की गठबंधन सरकार स्थिर है। उधर, आगामी चुनाव को देखते हुए विभिन्न दलों की सक्रियता बढ़ी है। इसमें भारतीय जनता पार्टी सबसे आगे है। फिलहाल, बैठक, जनसभा और संपर्क अभियान तेज कर दिए गए हैं।

राज्य प्रतिनिधि

पर्यावरण से आगे भारत के विकास का बड़ा अवसर 'कार्बन क्रेडिट'

डॉ. अतुल मलिकराम

आज पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन की चुनौती से जूझ रही है। मौसम का असंतुलन, बढ़ती गर्मी, अनियमित बारिश और प्राकृतिक आपदाएँ अब सामान्य बात बनती जा रही हैं। ऐसे समय में 'कार्बन क्रेडिट' शब्द अक्सर सुनने को मिलता है। लेकिन आम नागरिक के मन में सवाल होता है आखिर यह है क्या? और इसका हमसे क्या संबंध है? सरल शब्दों में समझें तो कार्बन क्रेडिट एक तरह का प्रमाण-पत्र है। जब कोई देश, कंपनी या परियोजना वातावरण में जाने वाले कार्बन डाइऑक्साइड जैसे प्रदूषण को एक टन कम करती है, तो उसे एक कार्बन क्रेडिट मिलता है। इस व्यवस्था की शुरूआत 1997 के क्योटो प्रोटोकॉल से हुई और 2015 के पेरिस समझौते के बाद यह और व्यापक हो गई। इसका मूल सिद्धांत सीधा है जो प्रदूषण कम करे, उसे आर्थिक लाभ मिले; जो ज्यादा प्रदूषण करे, उसे इसकी कीमत चुकानी पड़े।

आज यह केवल पर्यावरण की चर्चा नहीं रह गई है, बल्कि एक वैश्विक बाजार बन चुका है। दुनिया के कई देश अपने व्यापार नियमों में बदलाव कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, यूरोपीय संघ ने 'कार्बन बॉर्डर एडजस्टमेंट' जैसी व्यवस्था लागू करनी शुरू की है। इसका अर्थ यह है कि यदि किसी देश में उत्पादन के दौरान अधिक प्रदूषण होता है, तो उसके उत्पादों पर अतिरिक्त शुल्क लगाया जा सकता है। आने वाले समय में भारतीय उद्योगों को भी यह साबित करना होगा कि उनका उत्पादन

जलवायु परिवर्तन से सबसे अधिक खेती प्रभावित होती है।, लेकिन यही क्षेत्र नई आय का स्रोत भी बन सकता है। यदि किसान ड्रिप सिंचाई अपनाते हैं, फसल अवशेष नहीं जलाते, जैविक खाद का उपयोग बढ़ाते हैं, मिट्टी में कार्बन सुरक्षित रखने वाली पद्धतियां अपनाते हैं या सोलर पंप लगाते हैं तो वे कार्बन क्रेडिट अर्जित कर सकते हैं।

पर्यावरण के अनुकूल है।

यहां से कार्बन क्रेडिट का आर्थिक और राजनीतिक महत्व शुरू होता है। भारत लंबे समय से यह कहता आया है कि ऐतिहासिक रूप से विकसित देशों ने सबसे अधिक प्रदूषण किया है, इसलिए विकासशील देशों पर समान बोझ डालना न्यायसंगत नहीं है। लेकिन साथ ही यह भी सच है कि भविष्य की अर्थव्यवस्था 'ग्रीन' यानी पर्यावरण-अनुकूल दिशा में आगे बढ़ रही है। ऐसे में भारत के लिए कार्बन क्रेडिट को अवसर के रूप में देखना अधिक व्यावहारिक और रणनीतिक दृष्टिकोण है।

सबसे पहले बात करें किसानों की। खेती जलवायु परिवर्तन से सबसे अधिक प्रभावित होती है, लेकिन यही क्षेत्र नई आय का स्रोत भी बन सकता है। यदि किसान ड्रिप सिंचाई अपनाते हैं, फसल अवशेष नहीं जलाते, जैविक खाद का उपयोग बढ़ाते हैं, मिट्टी में कार्बन सुरक्षित रखने वाली पद्धतियां अपनाते हैं या सोलर पंप लगाते हैं तो वे कार्बन क्रेडिट अर्जित कर सकते हैं। इससे उनकी आय केवल फसल तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि पर्यावरण संरक्षण के बदले अतिरिक्त कमाई भी होगी। सही नीति और पारदर्शी व्यवस्था हो तो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई मजबूती मिल सकती है।

दूसरा बड़ा क्षेत्र एमएसएमई यानी सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग है। यह क्षेत्र देश के रोजगार और निर्यात की रीढ़ है। यदि छोटे उद्योग ऊर्जा-कुशल मशीनें अपनाएँ, सौर या पवन ऊर्जा का उपयोग करें और उत्पादन प्रक्रिया में प्रदूषण कम करें, तो उन्हें दोहरा लाभ मिलेगा, एक तरफ ऊर्जा लागत घटेगी, दूसरी तरफ कार्बन क्रेडिट के रूप में अतिरिक्त आय का अवसर मिलेगा। आज वैश्विक खरीदार भी 'ग्रीन सप्लाई चेन' को प्राथमिकता दे रहे हैं। ऐसे में भारतीय उद्योगों के लिए यह प्रतिस्पर्धा बढ़ाने का व्यावहारिक मार्ग है।

तीसरे स्तर पर सरकारों की भूमिका अहम है। भारत के विभिन्न राज्यों के पास अलग-अलग प्राकृतिक संसाधन हैं, कहीं घने जंगल, कहीं तेज हवाएं तो कहीं सौर ऊर्जा की अपार संभावनाएं हैं। यदि राज्य अपने संसाधनों के आधार पर कार्बन परियोजनाएं विकसित करें, तो वे राजस्व का नया स्रोत बना सकते हैं। केंद्र सरकार के लिए एक पारदर्शी और मजबूत राष्ट्रीय कार्बन बाजार विकसित करना रणनीतिक रूप से आवश्यक है। इससे भारत अपने जलवायु लक्ष्यों को पूरा करते हुए वैश्विक कार्बन फाइनेंस में महत्वपूर्ण स्थान बना सकता है।

कॉर्पोरेट क्षेत्र और निवेशकों के लिए भी यह एक बड़ा अवसर है। दुनिया भर में ईएसजी (पर्यावरण, सामाजिक जिम्मेदारी और सुशासन) आधारित निवेश तेजी से बढ़ रहा है। जो कंपनियां अपने उत्सर्जन कम करती हैं और कार्बन क्रेडिट उत्पन्न करती हैं, वे निवेशकों की पहली पसंद बन रही हैं। यह केवल छवि सुधारने का साधन नहीं, बल्कि दीर्घकालिक व्यावसायिक स्थिरता की रणनीति है। युवा पीढ़ी के लिए भी यह क्षेत्र नए अवसर खोल रहा है। कार्बन अकाउंटिंग, पर्यावरण ऑडिट, सस्टेनेबिलिटी सलाहकार, कार्बन बाजार विश्लेषण जैसे पेशे आने वाले वर्षों में तेजी से बढ़ेंगे। टेक्नोलॉजी आधारित स्टार्टअप भी इस क्षेत्र में बड़ी भूमिका निभा सकते हैं।

भारत की स्थिति इस संदर्भ में मजबूत है। हमारा प्रति व्यक्ति उत्सर्जन विकसित देशों की तुलना में कम है। हमारे पास सौर ऊर्जा की अपार क्षमता, विस्तृत वन क्षेत्र और कृषि आधारित अर्थव्यवस्था है। यदि इन संसाधनों का सही उपयोग किया जाए, तो कार्बन क्रेडिट के माध्यम से गांवों में वृक्षारोपण, स्वच्छ ऊर्जा और टिकाऊ खेती को बढ़ावा दिया जा सकता है। इससे पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ रोजगार और आय के नए अवसर पैदा होंगे।

पेरिस समझौते के तहत भारत ने 2030 तक गैर-जीवाश्म स्रोतों से 500 गीगावाट ऊर्जा क्षमता और उत्सर्जन तीव्रता में 45 प्रतिशत कमी का लक्ष्य तय किया है। यह लक्ष्य केवल सरकारी प्रयासों से संभव नहीं होगा। इसके लिए उद्योग, किसान, निवेशक और आम नागरिक, सभी की भागीदारी आवश्यक है। स्पष्ट है कि कार्बन क्रेडिट केवल पर्यावरण का विषय नहीं है। यह भविष्य की अर्थव्यवस्था, व्यापार नीति और राष्ट्रीय रणनीति से जुड़ा हुआ प्रश्न है। यदि भारत इसे दूरदर्शिता, पारदर्शिता और संतुलित नीति के साथ अपनाता है, तो यह हमारे लिए बाध्यता नहीं बल्कि विकास का नया अध्याय बन सकता है।

(लेखक पर्यावरणविद)

समाज के अकेलापन का साथी बनता है

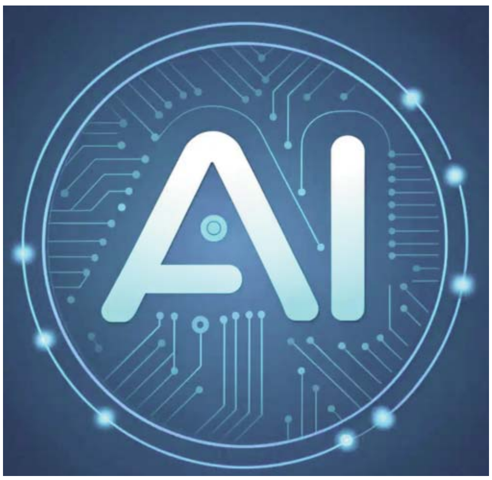

शालिनी सिन्हा

हे श्री.. प्लेलिस्ट में जो गाना है उसे बजा दो... हेलो एलेक्सा.. मेरे बॉस को देर से पहुंचने का मैसेज भेज दो.. या जेमिनी से ये पूछ लो कि मेरा मन दुःखी है मैं क्या करूं? ये सब कृत्रिम बुद्धिमता असिस्टेंट आपको आपके हिसाब से जवाब देने के लिए तत्पर है। साथ ही ये आपको ना तो कभी जज करने की कोशिश करते हैं और ना ही आपको गलत ही ठहराते हैं। इनको न तो आपसे कोई अपेक्षा है ना ही आपसे कोई भावनात्मक जुड़ाव,शायद इसीलिए ये आपके परिस्थितियों के अनुरूप और आपको संतुष्ट करने लायक जवाब देते है। जिसका नतीजा यह होता है कि आप मानवीय संबंधों से इतर कृत्रिम संबंधों को कहीं ज्यादा तरजीह देने लगते है। और इसे अपना भरोसेमंद साथी मान लेते है। आपके अकेलेपन को भरने के लिए यह बहुत ही किफायती,हर समय उपलब्ध रहने वाला साधन होने की वजह से भी आपकी निर्भरता इसपर बढ़ती चली जा रही है। सवाल यह नहीं है कि इन कृत्रिम बुद्धिमत्ता वाले उपकरण आपको कितनी राहत दे रहे है बल्कि चिंता इस बात की है कि जहां समाज और परिवार की भूमिका होनी चाहिए ,वहां तकनीकों पर निर्भरता बढ़ रही है। जो आपको समाज, परिवार से तो अलग कर ही रही है साथ ही आपकी भावनात्मक समझ को भी प्रभावित कर रही है। अगर ऐसे ही संवेदनाओं के स्तर पर तकनीकी निर्भरता बढ़ती रही तो भारतीय पारिवारिक परंपराओं की दिवाल ढह सकती है। नतीजतन कई तरह से सामाजिक खतरे भविष्य में उत्पन्न हो सकते हैं। मनुष्य -मनुष्य से दूर हो सकता है। कृत्रिम तकनीकी जुड़ाव मनुष्यों को समाज में मेलजोल बढ़ाने की बजाए ,उन्हें उससे दूर कर रहा है। ऐसे में सावधान हो जाने की जरूरत है।

आज गांव की गालियां वीरान हैं। मोहल्लों की चहल- पहल को टेलीविजनों और मोबाइल फोन्स ने खत्म कर दिया है। शहर तो पहले से ही तबाह है। बच्चे माता - पिता की जगह मोबाइल से खेलते नजर आ रहे हैं। हालत ये है कि अब मोबाइल एक नशे की लत बन चुकी है जिसको छुड़वाने के लिए कई सारे सेंटरस खोले जा रहे है और भविष्य में इनके बढ़ने की संभावना ज्यादा है।

अब जब पहले से ही मोबाईल फोन्स ने बहुत कुछ खत्म कर दिया है और इंसानों के भीतर खालीपन को भर दिया है तो ऐसे में कृत्रिम बुद्धिमता के बढ़ते प्रयोग से मनुष्य अपनी भावनात्मक संवेदना और सामाजिक पहचान को भी खो सकता है। एक तरफ जहां मोबाइल की दुनिया में मानव खुद को सबके बीच होते हुए भी अकेला महसूस कर रहा है वहीं कृत्रिम बुद्धिमता के इस नए जन्मते असिस्टेंटो को अपने अकेलेपन को भरने का साथी भी मान चुका है। यहां उसे ना तो रिश्ते निभाने की जरूरत है और न ही वह यहां संवेदनाओं से

आपके अकेलेपन को भरने के लिए यह बहुत ही किफायती, हर समय उपलब्ध रहने वाला साधन होने की वजह से भी आपकी निर्भरता इस पर बढ़ती चली जा रही है। सवाल यह नहीं है कि इन कृत्रिम बुद्धिमत्ता वाले उपकरण आपको कितनी राहत दे रहे हैं? बल्कि चिंता इस बात की है कि जहां समाज और परिवार की भूमिका होनी चाहिए, वहां तकनीकों पर निर्भरता बढ़ रही है। जो आपको समाज, परिवार से तो अलग कर ही रही है साथ ही आपकी भावनात्मक समझ को भी प्रभावित कर रही है। अगर ऐसे ही संवेदनाओं के स्तर पर तकनीकी निर्भरता बढ़ती रही तो भारतीय पारिवारिक परंपराओं की दीवार ढह सकती है।

आहत ही महसूस करता है। और यह हर समय उपलब्ध होने के साथ ही विश्वास पात्र भी है। इसलिए व्यक्ति इससे ज्यादा जुड़ने लगा है । ये कृत्रिम तकनीके ही मानवों की आदत बन चुकी है और अभिवृति भी। परस्परता, जिम्मेदारी और समझौता जैसी विशेषताएं मशीनें अपने भीतर पैदा नहीं कर सकती । इन्हीं मानवीय विशेषताओं को कमी मानवों के जीवन में मशीनी प्रवेश को बढ़ाने में भूमिका निभा रहे है। कृत्रिम मशीनो का कोई सामाजिक दायित्व नहीं होता । वह न तो इंसानों से असहमति रखती है और न ही उनसे त्याग की अपेक्षा करती है। ऐसे में व्यक्ति एक तरफा कृत्रिम संबंधों पर आश्रित रहने लगता है। जिसका प्रभाव व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता बल्कि कृत्रिम संबंधों के बढ़ने से पूरा सामाजिक ताना-बाना प्रभावित होता है। सामाजिक ताने - बाने में क्षति केवल परिवारो की नहीं अपितु समुदाय और समाज की भी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता जहां एक ओर व्यक्ति का व्यवहार परिवर्तित कर रही है वहीं दूसरी ओर भारतीय सामाजिक संरचना को बदल रही है।

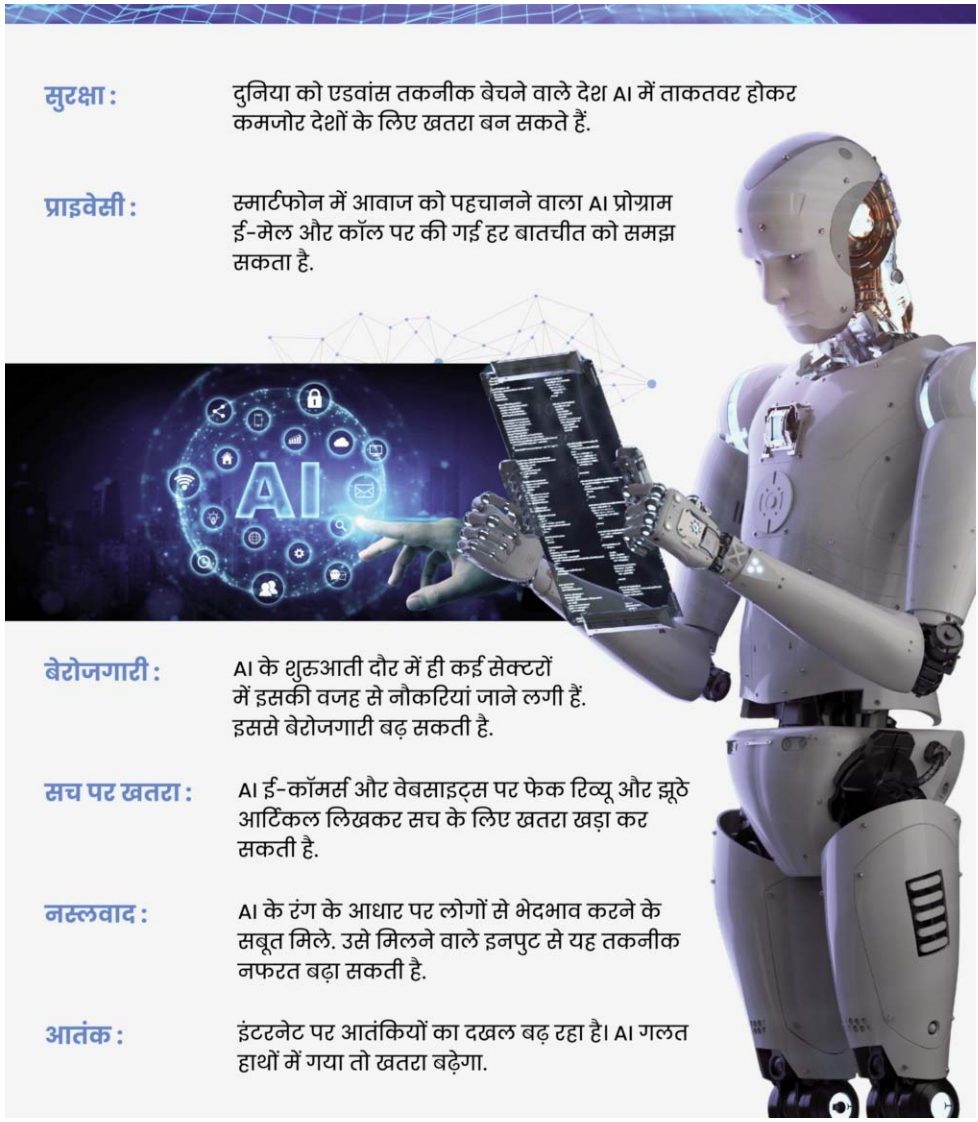

कृत्रिम बुद्धिमता का प्रवेश मोबाइल फोन्स तक ही सीमित नहीं है। यह बंद कमरों के भीतर और उससे भी ज्यादा हमारी संवेदनाओं को प्रभावित कर रहा है। हम इन कृत्रिम बुद्धिमत्ता वाले मशीनी उपकरणों से लगातार प्रभावित हो रहे हैं। मन को हल्का करने के लिए या जी भर के बाते करने के लिए हम जिन कृत्रिम संवाद प्रणालियो का हर वक्त इस्तेमाल कर रहे हैं वह हमारे अपने विचारों को खत्म कर रही हैं। और हम सब इन मशीनी विचारों के शिकार भी हो रहे हैं और संचालित भी। ये मशीने हमारे जीवन के लिए अब मात्र मशीने नहीं रही बल्कि यह एक मित्र, एक साथी बन चुकी है । यानि सोचने - समझने की शक्ति और मानवीय संवेदनशीलता अब सब ए०आई० के हवाले है। हमारी जगह अब ये मशीन सोच भी रही है और फैसले भी ले रही हैं। और हमारे अनुरूप जवाब देकर हमारा दिल जीत के विश्वास पात्र बन रही है। ऐसे में देखना होगा कि आने वाले युग में मनुष्य का संबंध मशीनों के साथ और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बीच कैसा होगा। क्या वह समाज में अपनी भूमिका को बढ़ाएगा या किसी मशीनी उपकरणों के बीच कैद होकर सामाजिक संरचना को पूर्णतः बदल देगा।

चुनौती देने वालों को स्पष्ट संदेश
बढ़ रही भारत की सनातन शक्ति

राजपुरोहित मधुर जी

आज का समय साधारण नहीं है। यह केवल घटनाओं का क्रम नहीं, बल्कि इतिहास का एक निर्णायक दौर है। विश्व के विभिन्न भागों में जिस प्रकार से संघर्ष, सामरिक प्रतिस्पर्धा, आर्थिक अस्थिरता और वैचारिक टकराव बढ़ रहे हैं, वह संकेत देता है कि मानव सभ्यता एक संक्रमण काल से गुजर रही है। ऐसे समय में भारत का स्थान केवल एक राष्ट्र के रूप में नहीं, बल्कि एक प्राचीन सभ्यता, एक आध्यात्मिक धुरी और एक सांस्कृतिक शक्ति के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

भारत को अब केवल बाहरी चुनौतियों पर ध्यान देने से काम नहीं चलेगा। हमें अपनी आंतरिक चेतना, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक आत्मविश्वास को भी उसी दृढ़ता से सुदृढ़ करना होगा। आज विश्व के कई क्षेत्र युद्ध और तनाव की परिस्थितियों से गुजर रहे हैं। आर्थिक प्रतिबंध, सामरिक गठबंधन, तकनीकी प्रभुत्व की प्रतिस्पर्धा और वैचारिक वर्चस्व की होड़ ने वैश्विक वातावरण को अस्थिर बना

भारत को अब केवल बाहरी चुनौतियों पर ध्यान देने से काम नहीं चलेगा। हमें अपनी आंतरिक चेतना, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक आत्मविश्वास को भी उसी दृढ़ता से सुदृढ़ करना होगा। विश्व के कई क्षेत्र युद्ध और तनाव की परिस्थितियों से गुजर रहे हैं। परंतु यह भी सत्य है कि हर उभरती शक्ति को रोकने या कमजोर करने के प्रयास भी होते हैं।

दिया है। इतिहास गवाह है कि जब भी विश्व व्यवस्था बदलती है, तब उभरते राष्ट्रों को विशेष चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। भारत आज विश्व मंच पर आत्मविश्वास के साथ खड़ा है। उसकी आर्थिक प्रगति, तकनीकी उन्नति और सांस्कृतिक प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है। परंतु यह भी सत्य है कि हर उभरती शक्ति को रोकने या कमजोर करने के प्रयास भी होते हैं।

हमें समझना होगा कि बाहरी आक्रमण केवल सीमा पर नहीं होते। आधुनिक युग में युद्ध केवल हथियारों से नहीं, बल्कि सूचनाओं, विचारों और मनोविज्ञान के स्तर पर भी लड़े जाते हैं। एक झूठी सूचना, एक भ्रामक प्रचार या एक उकसाने वाला संदेश समाज को भीतर से विचलित कर सकता है। यदि समाज विवेक खो देता है और भावनाओं में बहकर प्रतिक्रिया देता है, तो किसी बाहरी शक्ति को अलग से प्रयास करने की आवश्यकता नहीं रहती।

भारत की आत्मा सनातन है। यह सभ्यता हजारों वर्षों की साधना, ज्ञान और त्याग से निर्मित हुई है। जब-जब इस भूमि पर संकट आया, तब-तब भारत ने धैर्य भी दिखाया और पराक्रम भी। हमारी संस्कृति ने हमें सिखाया है कि शांति सर्वोत्तम है, परंतु अन्याय के सामने मौन रहना उचित नहीं। सहिष्णुता हमारी पहचान है, परंतु कायरता नहीं।आज आवश्यकता है कि हम अपनी सांस्कृतिक जड़ों को पुनः पहचानें। हिंदू सभ्यता की मूल शक्ति संगठन, आत्मबल और धर्मनिष्ठा है। यदि समाज वैचारिक रूप से सशक्त होगा, तो कोई भी भ्रम उसे विचलित नहीं कर सकेगा। यदि समाज संगठित रहेगा, तो कोई भी विभाजनकारी प्रयास सफल नहीं होगा। राष्ट्र को कमजोर करने वाली प्रवृत्तियाँ सदैव प्रत्यक्ष रूप में सामने नहीं आतीं। वे कभी वैचारिक भ्रम के रूप में आती हैं, कभी सामाजिक तनाव के रूप में, कभी शासन के प्रति अविश्वास फैलाने के रूप में। छोटी-छोटी घटनाओं को बड़ा बनाकर प्रस्तुत करना, आधी-अधूरी सूचनाओं को सच का रूप देना और युवाओं के मन में असंतोष भरना—ये सब संकेत हैं कि हमें सजग रहना होगा।

सरकार की जिम्मेदारी है कि राष्ट्रीय सुरक्षा तंत्र को सुदृढ़ बनाए, कानून व्यवस्था के साथ कोई समझौता न करे और राष्ट्र की एकता को सर्वोच्च प्राथमिकता दे। परंतु केवल शासन ही पर्याप्त नहीं है। समाज को भी आत्मअनुशासन अपनाना होगा। यदि नागरिक बिना सत्यापन के संदेश फैलाएँगे, यदि वे आवेश में प्रतिक्रिया देंगे, तो वे अनजाने में उसी अस्थिरता को बल देंगे जिससे वे स्वयं चिंतित हैं।

भारत की सहनशीलता को कमजोरी समझने की भूल नहीं की जानी चाहिए। यह राष्ट्र धैर्यवान है, परंतु जब यह जागता है तो दृढ़ संकल्प के साथ खड़ा होता है। हमारी परंपरा ने हमें आत्मसंयम सिखाया है, परंतु साथ ही यह भी सिखाया है कि धर्म और राष्ट्र की रक्षा सर्वोपरि है। आज का युवा वर्ग विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यदि युवा जागरूक, शिक्षित और राष्ट्र के प्रति समर्पित होगा, तो भविष्य सुरक्षित रहेगा। उसे सोशल मीडिया के भ्रम से बचना होगा, तथ्य और प्रचार के अंतर को समझना होगा और अपने चरित्र को राष्ट्र निर्माण के योग्य बनाना होगा। हमारा लक्ष्य किसी के प्रति द्वेष नहीं है। हमारा लक्ष्य राष्ट्र की स्थिरता, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक गरिमा की रक्षा है। भारत की शक्ति उसकी विविधता में एकता है। यदि यह एकता बनी रही, तो कोई भी वैश्विक परिस्थिति हमें डिगा नहीं सकती। समय की पुकार स्पष्ट है। हमें सतर्क रहना होगा। हमें संगठित रहना होगा। हमें संयमित रहना होगा। राष्ट्र केवल शासन से नहीं, बल्कि नागरिकों के चरित्र से चलता है। भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं है। यह एक चेतना है। यह एक विचार है। यह एक सांस्कृतिक प्रवाह है जो हजारों वर्षों से निरंतर बह रहा है। यदि यह चेतना जागृत रही, तो कोई भी शक्ति हमें पराजित नहीं कर सकती। आज आवश्यकता है कि हम आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें, अपनी जड़ों को मजबूत रखें और राष्ट्रहित को व्यक्तिगत भावनाओं से ऊपर रखें। यही सच्चा राष्ट्रवाद है। यही सच्ची धर्मनिष्ठा है।

(लेखक ज्योतिषाचार्य, प्रेरक वक्ता)

डॉ. प्रियंका सौरभ

पढ़ाई के नाम पर छिनता बचपन

अखबार की एक छोटी-सी खबर कई बार पूरे समाज के चेहरे से नकाब हटा देती है। 'पढ़ाई के लिए कहने और रील बनाने से रोकने पर किशोर छोड़ रहे घर'-यह वाक्य सिर्फ. सूचना नहीं, बल्कि हमारे समय की एक गहरी त्रासदी का बयान है। यह बताता है कि घर, जो बच्चों के लिए सबसे सुरक्षित स्थान माना जाता है, कई मामलों में उनके लिए असहनीय दबाव का केंद्र बनता जा रहा है। पढ़ाई, अनुशासन और भविष्य की चिंता-ये सब आवश्यक हैं, लेकिन जब ये डर, ताने, अपमान और तुलना के साथ बच्चों पर थोपे जाते हैं, तो नतीजा सीखने की प्रेरणा नहीं, बल्कि पलायन होता है। हमें ठहरकर सोचने को मजबूर करती है कि आखिर हम अपने बच्चों से क्या चाहते हैं– अंक, रैंक और प्रदर्शन या एक संतुलित, संवेदनशील व स्वस्थ मनुष्य ?किशोर अभूतपूर्व बदलावों के दौर से गुजर रहा है। डिजिटल दुनिया ने उसकी आंखों के सामने विकल्पों का विस्तार कर दिया है–रील्स, शॉर्ट वीडियो, ऑनलाइन दोस्ती, त्वरित प्रसिद्धि और तुरंत मिलने वाली प्रशंसा। यह सब आकर्षक है, पर

माता-पिता की चिंता स्वाभाविक है। वे अपने अनुभवों से सीखकर बच्चों को कठिनाइयों से बचाना चाहते हैं। चिंता नियंत्रण में बदल जाती है, तब नुकसान होता है। बच्चों के शौक छीन लेना, दोस्तों से मिलना रोकना, हर समय तुलना करना-ये तरीके अल्पकाल में अनुशासन जैसे दिख सकते हैं।

इसके भीतर अस्थिरता भी है। ऐसे में परिवार की भूमिका और भी निर्णायक हो जाती है। दुर्भाग्य से कई घरों में संवाद की जगह आदेश ने ले ली है, समझ की जगह तुलना ने, और सहानुभूति की जगह अपेक्षाओं ने। 'हम तुम्हारे भले के लिए कह रहे हैं'यह वाक्य अक्सर बच्चों के मन में भय बनकर उतरता है,क्योंकि इसके साथ उनकी बात सुनने की इच्छा नहीं जुड़ी होती।

पढ़ाई को लेकर समाज में एकांगी दृष्टि विकसित हो गई है। सफलता का पैमाना सीमित कर दिया गया है–अच्छे अंक, प्रतिष्ठित कॉलेज और तथाकथित सुरक्षित करियर। इस दौड़ में यह भूल जाता है कि हर बच्चा एक जैसा नहीं होता। किसी की रुचि विज्ञान में है, किसी की कला में; कोई खेल में खिलता है, कोई लेखन में। जब एक ही साँचे में सबको ढालने की कोशिश होती है, तो कई बच्चे टूटते हैं। वे अपनी असफलता को निजी अपराध मानने लगते हैं और धीरे-धीरे आत्मविश्वास खो देते हैं। घर छोड़ना उस टूटन का चरम बिंदु है–एक हताश प्रयास, जहाँ बच्चा भागकर शांति ढूंढना चाहता है। किशोरावस्था वैसे ही भावनात्मक उथल-पुथल का समय है। शरीर बदलता है, मन सवालों से भरता है, पहचान गढ़ने की बेचैनी होती है। ऐसे समय में अगर घर में डांट, चिल्लाहट, तिरस्कार और निरंतर निगरानी का माहौल हो, तो बच्चा खुद को अकेला महसूस करता है। उसे लगता है कि उसकी भावनाओं की कोई कीमत नहीं। कई बार माता-पिता बच्चों की चुप्पी को अनुशासन समझ लेते हैं, जबकि वह भीतर जमा होता तनाव होता है। यह तनाव कब विस्फोट बन जाए–घर छोड़ने, नशे की ओर जाने या आत्म-क्षति तक–कहना मुश्किल है। रील्स और सोशल मीडिया को इस समस्या का एकमात्र दोषी ठहराना भी सरलीकरण होगा। यह सच है कि अत्यधिक स्क्रीन टाइम बच्चों की एकाग्रता और धैर्य को प्रभावित करता है, लेकिन सवाल यह है कि बच्चे स्क्रीन में शरण क्यों लेते हैं? अक्सर इसलिए क्योंकि वहाँ उन्हें सुना जाता है, सराहा जाता है, या कम-से-कम जज नहीं किया जाता। अगर घर में संवाद जीवित हो, साझा समय हो, भरोसे का रिश्ता हो, तो डिजिटल आकर्षण संतुलन में रहता है। समस्या तकनीक नहीं, तकनीक के साथ हमारे रिश्ते की है। माता-पिता की चिंता स्वाभाविक है। वे अपने अनुभवों से सीखकर बच्चों को कठिनाइयों से बचाना चाहते हैं। पर चिंता जब नियंत्रण में बदल जाती है, तब नुकसान होता है। बच्चों के शौक छीन लेना, दोस्तों से मिलना रोकना, हर समय तुलना करना–ये तरीके अल्पकाल में अनुशासन जैसे दिख सकते हैं, पर दीर्घकाल में विश्वास तोड़ देते हैं। बच्चा आज्ञाकारी दिखे, पर भीतर विद्रोह पनपता रहता है। पढ़ाई के प्रति प्रेम डर से नहीं, अर्थ से पैदा होता है–जब बच्चा समझता है कि वह क्यों पढ़ रहा है, किस दिशा में बढ़ रहा है।

स्कूल और शिक्षण संस्थानों की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं। परीक्षा-केंद्रित व्यवस्था बच्चों को अंक मशीन बना देती है। काउंसलिंग, लाइफ स्किल्स और मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर निवेश अभी भी अपवाद है। शिक्षक अक्सर पाठ्यक्रम पूरा करने के दबाव में बच्चों की भावनात्मक जरूरतों को नहीं देख पाते। स्कूल और घर अगर मिलकर एक सहायक तंत्र बनाएं–जहां बच्चे की रुचि, क्षमता और मानसिक स्थिति पर संवाद हो–तो बहुत-सी त्रासदियां रोकी जा सकती हैं। समाज में सफलताओं का प्रदर्शन और असफलताओं का उपहास भी समस्या को बढ़ाता है। रिश्तेदारों की तुलना, पड़ोस की अपेक्षाएं, सोशल मीडिया पर उपलब्धि का शोर–ये सब माता-पिता के दबाव को कई गुना कर देते हैं, जो आगे बच्चों पर उतरता है। हमें सामूहिक रूप से यह स्वीकार करना होगा कि हर रास्ता एक जैसा नहीं होता और देर से खिलने वाले फूल भी सुगंध बिखेरते हैं। जीवन रैखिक नहीं है; उसमें ठहराव, मोड़ और पुनः शुरूआत भी होती है।

मानसिक स्वास्थ्य को लेकर चुप्पी सबसे खतरनाक है। बच्चों की उदासी, चिड़चिड़ापन, नींद में बदलाव, पढ़ाई से अचानक दूरी–ये सब संकेत हैं, जिन्हें 'नाटक' या ' जिद' कहकर टाल देना आसान है। लेकिन समय रहते संवेदनशील हस्तक्षेप–एक शांत बातचीत, बिना टोके सुनना, जरूरत पड़े तो पेशेवर काउंसलिंग–कई जिंदगियाँ बचा सकता है। काउंसलिंग कोई कलंक नहीं, बल्कि समझदारी का कदम है। घर के भीतर संवाद की संस्कृति बनाना आज की सबसे बड़ी जरूरत है। रोज का साझा समय–बिना मोबाइल, बिना आदेश–जहाँ बच्चा अपने दिन, डर और सपने कह सके। माता-पिता का यह स्वीकार करना कि उनसे भी गलती हो सकती है, बच्चों को ईमानदार बनाता है। नियम जरूरी हैं, पर नियमों के पीछे कारण बताना और बच्चों की राय सुनना उतना ही जरूरी है। अनुशासन सहमति से आए, भय से नहीं।

नीतिगत स्तर पर भी पहल आवश्यक है। स्कूलों में प्रशिक्षित काउंसलर, माता-पिता के लिए नियमित कार्यशालाएँ, पाठ्यक्रम में जीवन-कौशल और भावनात्मक शिक्षा का समावेश–ये कदम समय की मांग हैं। डिजिटल साक्षरता केवल तकनीक चलाना नहीं, बल्कि उसकी सीमाएँ समझना भी है। बच्चों को स्वयं-नियमन सिखाना होगा, ताकि वे स्क्रीन और पढ़ाई के बीच संतुलन बना सकें।अंततः प्रश्न यह है कि हम किस तरह का समाज बनाना चाहते हैं। ऐसा समाज जो बच्चों को डराकर सफल' बनाता है, या ऐसा जो उन्हें समझकर सक्षम बनाता है? घर छोड़ते किशोर हमारी सामूहिक विफलता का संकेत हैं।

यह केवल किसी एक परिवार की कहानी नहीं, बल्कि हमारी प्राथमिकताओं का आईना है। अगर हम नहीं रुके, नहीं सुना, नहीं बदले–तो खबरें और भी कड़वी होंगी। हमें याद रखना चाहिए कि बच्चे भविष्य नहीं, वर्तमान हैं। उनकी हँसी, जिज्ञासा और असहमति–सब जीवन का हिस्सा हैं। पढ़ाई महत्वपूर्ण है, पर उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है वह वातावरण जिसमें पढ़ाई होती है। जब घर दोस्ती, सम्मान और भरोसे का स्थान बनेगा, तब बच्चे भागेंगे नहीं–वे वहीं रहकर उड़ान भरेंगे। यही समय की सबसे बड़ी पुकार है, और यही हमारे हाथ में सबसे बड़ी जिम्मेदारी।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : एक दृष्टि
...और कारवां बढ़ता गया

स्नेहिल त्रिवेदी पाण्डेय

राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए प्रतिबद्ध राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सौ वर्षों की यात्रा में सब कुछ सुखद ही रहा हो ऐसा नहीं है। प्रतिकूल परिस्थितियों में राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा के निमित्त राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का जन्म हुआ। भारत की परम्परा और संस्कृति में अटूट श्रद्धा रखने वाले स्वयंसेवकों के अनुशासन के कारण संघ धीरे-धीरे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहा।1925 ई.से लेकर अपने सौवें वर्ष में प्रवेश करने तक संघ की इस यात्रा में अनेक ऐसे स्वयं सेवक बन्धु रहे हैं जिनका समाज के लिए महत्वपूर्ण योगदान रहा है लेकिन उन्होंने अपने उस सद्प्रयास का श्रेय स्वयं को नहीं दिया, उनका सदैव ऐसा मानना रहा कि संघ में जो कुछ भी होता है सब मिल जुल कर करते हैं । संघ के निरंतर आगे बढ़ते रहने का एक बड़ा कारण है उसके अपने भीतर का लोकतांत्रिक माहौल। स्थापित संघठन या दल किसी नए संगठन या दल के लिए चुनौती बनते हैं ऐसी ही चुनौती का सामना संघ और उसके स्वयंसेवकों को भी करना पड़ा।संघ की स्थापना के समय भारत पर अंग्रेजों का शासन था ,भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तुष्टीकरण की चपेट में थी । आमजन मानस अंग्रेजों के उत्पीड़न के विरोध में कांग्रेस के नेतृत्व में एकजुट तो था लेकिन विभाजनकारी शक्तियों की सक्रियता भी किसी से छुपी नहीं थी। भारत की परम्परा और संस्कृति में दृढ़ आस्था रखने वाले डॉ.केशव बलराम हेडगेवार उन प्रबुद्ध लोगों में से थे जिन्हें देश के भविष्य को लेकर चिंता थी। उनकी चिंता का मजबूत आधार था,हिन्दुओं का एकतरफा उत्पीड़न उनसे देखा न गया ।उन्होंने अपने ही जैसा भाव रखने वाले लोगों से संपर्क स्थापित कर अपनी चिंता,अपने मन का भाव उनके साथ साझा किया ।उनकी चिंता स्वाभाविक थी इसलिए समाज के लोग भी उनके इस सद्प्रयास में उनका सहयोग करने के लिए आगे आए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना से पूर्व ही अनेक ऐसी घटनाएं घट चुकी थी जिससे यह तो स्पष्ट हो गया था कि विभाजनकारी शक्तियां भीतर और बाहर दोनों ओर से कांग्रेस को खोखला कर चुकी थीं।यदि ऐसा नहीं था तो कांग्रेस में ही रहे पंडित मदन मोहन मालवीय को हिन्दू महासभा की स्थापना न करनी पड़ती। हिन्दू महासभा की स्थापना से यह तो स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दुओं का उत्पीड़न चरम पर था और कांग्रेस इस विषय को सम्भालने में असफल रही। डॉ.हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना किसी दल या संघठन के विरोध के लिए नहीं की,संघ का तो मूल स्वाभाव ही सहयोग का है ।संघ ने अपनी सौ वर्षों की यात्रा सहयोग और समर्पण के भरोसे ही तो तय की है। संघ के स्वयं सेवकों ने अपने स्वभाव के अनुरूप देश पर आने वाले किसी भी संकट के समय अपना सर्वोत्कृष्ट सहयोग देश और समाज के लिए किया ।संघ के सेवा कार्यों को देखते हुए समाज ने भी संघ को हाथों हाथ लिया। समाज में संघ के बढ़ते प्रभाव को देख कर विभाजनकारी शक्तियों ने एक ऐसा नैरेटिव गढ़ने का प्रयास किया जिससे यह साबित किया जा सके कि संघ साम्प्रदायिक है ,गांधी की हत्या के बाद ऐसे नैरेटिव गढ़ने वालों को एक मौका भी मिल गया । उनके दुष्प्रचार के कारण ही संघ को प्रतिबंधित किया गया ।जो लोग आज संघ को देख और समझ रहे है उन्हें भली प्रकार यह बात समझ में आ रही होगी कि संघ पर लगाया गया प्रतिबंध संघ के सेवाकार्यों के कारण समाज में उसके बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए था ।

गांधी की हत्या में संघ की कोई भूमिका नहीं थी दरअसल विभाजन के दौरान संघ के स्वयं सेवकों ने हिन्दुओं की रक्षा के निमित्त अपने प्राण दांव पर लगा दिए। रावलपिंडी, मुल्तान, काराची,लाहौर जैसे अनेक ऐसे शहर जो विभाजन के दौरान दंगों की चपेट में थे वहां से पीड़ितों को बाहर निकालने,उन्हें सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाने के लिए संघ के स्वयंसेवकों ने योजनाबद्ध ढंग से कार्य किया। उन्हें अपनी पहचान छुपाकर दंगाग्रस्त स्थानों पर कार्य करना पड़ता था ।पीड़ितों को राहत शिविरों तक पहुचांना,भारत की ओर जाने वाली रेलगाड़ी के तय समय की सूचना देना,बिछुड़े परिवारी जनों को एक दूसरे से मिलवाना ,भारत पहुँचने पर अपने संपर्कों का उपयोग कर उनके लिए भोजन, निवास, रोजगार की व्यवस्था करना इत्यादि अनेक ऐसे कार्य स्वयंसेवकों के द्वारा निस्वार्थ भाव से किए गए जिसके कारण अधिक से अधिक महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों को बचाया जा सका। विभाजन के दौरान संघ के सेवाकार्यों का उल्लेख गुरुदत्त और द्रोणवीर कोहली के द्वारा लिखे गए उपन्यासों में भी आता है ।दोनों ही लेखकों को विभाजन की पीड़ा का सामना करना पड़ा इसलिए उन्होंने ने जो भोगा सो गाया। प्रतिष्ठित उपन्यासकार नरेंद्र कोहली का स्पष्ट मानना है कि 'संघ के लोग न होते तो स्थितियां और अधिक विभत्स होती।'

1925 ई. से लेकर 1947 ई. तक आते-आते संघ विभाजनकारी शक्तियों और तुष्टीकरण की नीति पर चलने वाले राजनीतिक दलों के लिए चुनौती बन गया ।संघ समाज में था ,सत्ता उसका मनोबल तोड़ना चाहती थी उसके लिए गांधी की हत्या को तत्कालीन सत्ता ने उचित अवसर की तरह देखा। भारत ही नहीं अपितु विश्व में लोकप्रिय हो चुके गांधी की हत्या से पूरा भारत व्यथित हो उठा। एक तरफ सड़कों पर भूखे प्यासे विस्थापित और दूसरी ओर गांधी की हत्या। एक बार फिर से अपने मन मुताबिक नैरेटिव गढ़ने वाले प्रगतिशील लोगों की बाढ़ आ गयी। जिन्होंने विभाजन पर नहीं लिखा ,विस्थापितों पर नहीं लिखा उन्होंने संघ को कटघरे में खड़ा करने का एक भी मौका नहीं

छोड़ा। संघ बेदाग था उसकी बेदाग छवि अंततः बनी रही ,विरोधी एक बार फिर चित हुए।

भारत चीन युद्ध के बाद तत्कालीन सरकार के द्वारा गणतंत्र दिवस के परेड में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को सम्मिलित करने से उस नैरेटिव पर एक बार फिर से विराम लग गया जिसके आधार में कोई ठोस प्रमाण नहीं था। इसे ऐसा भी कहा जा सकता है कि एक बार फिर से संघ की जीत हुई थी। संघ की रीति नीति ऐसी रही है कि उसके स्वभाव में है बस करते जाना। संघ पूर्व से ही सरकार को सचेत करता आ रहा था कि ऐसी शक्तियां जो भारत को अस्थिर करने के लिए भारत में तथाकथित प्रगतिशीलता के नाम पर बौद्धिक वर्ग को अपने जद में लेती जा रही हैं यह भारत के भविष्य के लिए सुखद नहीं होगा। हुआ भी यही चीन के समर्थन में रहने वाले कामरेडो को मुंह की खानी पड़ी जिनके भीतर भारत बचा था वह तो भारत चीन युद्ध के बाद ऐसे प्रगतिशील संगठनों को ही दुत्कारने करने लगे और जिन लोगों को फिर भी बात समझ में नहीं आई उन्हें भविष्य में मुंह की खानी पड़ी। भारत चीन युद्ध के बाद देश के अनेक प्रतिष्ठित साहित्यकारों में प्रगतिशीलता का दम भरने वाले उन संगठनों को छोड़ दिया जो प्रगतिशीलता के नाम पर अपने ही ऊपर हमला करने वाले देश के समर्थन में अपनी बात कह रहे थे अथवा वे जो उनके खिलाफ चुप थे। संघ के स्वयंसेवक जब अपनी बात रखते तो ऐसे ही प्रगतिशील उन्हें घेर लिया करते थे। संघ के स्वयंसेवकों का धैर्य उनका आत्मविश्वास उनकी ताकत बना। वे कभी निराश नहीं हुए।

संघ अपने उद्देश्यों के साथ अपनी गति से आगे बढ़ता रहा । समाज का विश्वास भी समय के साथ संघ के प्रति जमता रहा। इंदिरा गांधी के आपातकाल के दौरान एक बार फिर से संघ के स्वयंसेवकों को उत्पीड़न का शिकार होना पड़ा ।संघ के अनेक ऐसे प्रतिष्ठित स्वयंसेवकों को जेल में डाल दिया गया जिन्होंने अपना पूरा जीवन देश और समाज के कल्याण के लिए लगा दिया था। आमजन मानस की सहानुभूति पूर्व की भांति एक बार फिर से संघ के साथ रही। आपातकाल के बाद संघ और अधिक मजबूत हुआ क्योंकि संघ ने अपनी दृष्टि में किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं किया था ।उसकी लड़ाई किसी सरकार ,संस्था अथवा व्यक्ति से नहीं थी ,वह भारतीय जनमानस का मन कुछ इस प्रकार से बनाने में लगा हुआ था जिससे की राष्ट्रीयता मजबूत हो सके ।सभी के भीतर भारतबोध हो ।विदेशी शक्तियां अपनी पूरी ऊर्जा के साथ स्वतंत्रता पूर्व से ही सक्रिय थीं वे संघ के मनोभाव को समझ चुकी थी और उन शक्तियों ने अनेक माध्यमों से संघ का विरोध किया। उन्होंने संघ के संदर्भ में विश्व स्तर पर एक ऐसी छवि बनाने का प्रयास किया जिससे ये साबित किया जा सके कि संघ रुढ़िवादी है,साम्प्रदायिक है क्योंकि भारत को अस्थिर करने के लिए नैरेटिव गढ़ने वाले लोगों को समय के साथ यह बात समझ में आने लगी थी कि संघ हर उस हृदय तक पहुंच गया है जो हृदय अपने देश और समाज के लिए धड़कता है ।जिसके अंतर्मन में परहित का भाव है ।जो दूसरों के दुःख से द्रवित होता है।

इंदिरा गांधी की हत्या और फिर राजीव गांधी की हत्या, के बाद एक बार फिर से स्वयंसेवकों को निशाना बनाया गया। संघ पूरी मेहनत से अपना काम खड़ा करता रहा लेकिन बीच-बीच में कुछ ऐसी घटनाएं भी घटती रही कि उसका असर सीधा संघ पर होता रहा। इंदिरा गांधी की हत्या उन्हीं के अंगरक्षकों ने की और राजीव गांधी की हत्या दक्षिण भारत में हुई। दोनों की हत्या भारत विरोधी शक्तियां जो भारत में सक्रिय थी उन्हीं के कारण हुई। संघ सदैव ऐसी शक्तियों से सरकार और समाज दोनों को ही सचेत करता रहा लेकिन सत्ता की चाह रखने वाले लोग इस सत्य को नकारते रहे। लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री जी ने ठीक ही कहा है कि 'हमारा स्पष्ट मत है, ये देश सिर्फ सरकारें नहीं बनाती हैं, ये देश राजसत्ता पर विराजमान लोग ही नहीं बनाते हैं, ये देश शासन की विधा संभालने वाले नहीं बनाते हैं। ये देश बनता है कोटि-कोटि जनों के पुरुषार्थ से, ऋषियों के, मुनियों के, वैज्ञानिकों के, शिक्षकों के, किसानों के, जवानों के, सेना के, मजदूरों के, हर किसी के प्रयास से देश बनता है। हर किसी का योगदान होता है। व्यक्ति का भी होता है, संस्थाओं का भी होता है।'

जिन कोटि-कोटि जनों का उल्लेख प्रधानमंत्री जी अपने भाषण में कर रहे हैं ये कोटि-कोटि जन वे ही हैं जिनका हृदय अपने राष्ट्र के लिए धड़कता है। अपने इसी भाषण में वह बड़े गर्व के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उल्लेख भी करते हैं, 'आज मैं बहुत गर्व के साथ एक बात का ज़िक्र करना चाहता हूं। आज से सौ साल पहले एक संगठन का जन्म हुआ, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, सौ साल की राष्ट्र की सेवा का एक बहुत ही गौरवपूर्ण स्वर्णिम पृष्ठ है। व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण के संकल्प को लेकर के, सौ साल तक मां भारती का कल्याण का लक्ष्य लेकर के, लक्ष्यार्थ स्वयंसेवकों ने मातृभूमि के कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। सेवा, समर्पण, संगठन और अप्रतिम अनुशासन, यह जिसकी पहचान रही है, ऐसा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दुनिया का यह सबसे बड़ा एनजीओ है एक प्रकार से, सौ साल का उसका समर्पण का इतिहास है। मैं आज यहां लाल किले के प्राचीर से सौ साल की इस राष्ट्र सेवा की यात्रा में योगदान करने वाले सभी स्वयंसेवकों को आदरपूर्वक स्मरण करता हूं और देश गर्व करता है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की इस सौ साल की भव्य, समर्पित यात्रा को और हमें प्रेरणा देता रहेगा।' भारत के प्रधानमंत्री के द्वारा लाल किले की प्राचीर से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रशंसा अनायास नहीं है उन्होंने जो कुछ कहा अनुभूति के आधार पर कहा। वे भारत के प्रधानमंत्री हैं,भारतीय जनमानस को भली प्रकार समझते हैं। प्रधानमंत्री जी के द्वारा संघ की प्रशंसा की गयी यह विभाजनकारी शक्तियों को प्रश्रय देने वाले लोगों को ठीक नहीं लगा।

(लेखिका सार्वजनिक शिक्षोन्नयन संस्थान की अध्यक्ष)

बचपन में मैं कई बार 'पंडत' होना चाहा था

अशोक मिश्र

मैं लगभग बारह-तेरह साल की उम्र में ही 'पंडित' हो जाना चाहता था। छोटा-मोटा नहीं..प्रकांड पंडित। तब मैं छठवीं या सातवीं कक्षा में था। अपने पांडित्य के चक्कर में स्कूल के अध्यापक-अध्यापिकाओं से लगभग रोज पिट जाता था। अध्यापिकाएं पीटते समय अकसर कहा करती थीं, 'नालायक! पढ़ने-लिखने पर ध्यान देने की बजाय फालतू कामों में लगा रहता है। पता नहीं, कहां से भर्ती हो गया है इस स्कूल में।' मेरी सहपाठिनें मेरे पंडित होने के प्रयास से हमेशा परेशान रहती थीं। गाहे-बगाहे सहपाठिनों के कुछ हो चुके या होने वाले 'पंडितों' से स्कूल के भीतर या स्कूल के बाहर मारपीट हो जाती थी। बाकायदा दोनों तरफ की

सेनाएं सजतीं और कुरुक्षेत्र सा समां बंध जाता। कुछ दबंग या ऊंची क्लास की लड़कियों के हाथों भी कई बार ठोंका-पीटा जा चुका था। मेरे पंडित होने के प्रयास की सुकीर्ति यदा-कदा प्रिंसिपल या क्लास टीचर तक पहुंच ही जाती थी। उस दिन तो समझो, मेरी शामत आनी निश्चित है। भरी क्लास में लात-घूंसे खाकर भी वीरों (बेशर्म भी कह सकते हैं) की तरह हंसता रहता था। सीने में जख्म लिए मुस्कुराता रहता। जिस दिन मास्टर-मास्टरनियों के लात-घूंसे नहीं खाता, तो लगता था कि कहीं कुछ कमी रह गई। एक दिन तो पंडित होता-होता रह गया। स्कूल में बात खुल गई, तो साइंस टीचर सुरिंदर कौर ने मेरे बड़े भाई को स्कूल में तलब किया। दरअसल, उस दिन कौर मैडम पीटते-पीटते थक गईं, तो लेकिन मेरी आंखों में आंसू देखने की तमन्ना उनकी अधूरी ही रही। पता नहीं क्यों, फिल्म 'मर्द' का यह डायलॉग मेरे अंतरमन में कहीं गहरे छिपा हुआ बैठा था कि मर्द को दर्द नहीं होता।

मैं आखिर मर्द का बच्चा था, मर्द था। रो कैसे देता? उस दिन उन्होंने मेरे मोहल्ले में रहने वाली अहिल्या से कहा, 'तुम इसके मोहल्ले में रहती हो न! आज तुम इसके घर जाना। इसके पिता जी से कहना कि मैंने बुलाया है।' अहिल्या से एक सप्ताह पहले ही मेरी पतंग को लेकर लड़ाई हुई थी। सो, उसने लड़ाई का बदला लेने का अच्छा मौका समझकर कहा, 'मैडम जी! इसके पिता जी तो अक्सर बाहर रहते हैं। अगर इसके भइया को बुलाया जाए, तो शायद यह सुधर जाए। यह और इसके सभी भाई अपने बडे' 'भइया' से ऐसे डरते हैं, जैसे शेर से बकरी डरती है। कुत्ते से बिल्ली डरती है। 'बस फिर क्या था! सुरिंदर कौर ने फरमान जारी किया,'कल इस बेशर्म के 'भइया' को बुलाकर लाना। इसकी यहीं खाल न खिंचवाई, तो कहना।'

मैंने मैडम सुरिंदर कौर के लाख हाथ-पैर जोड़े कि 'दद्दा' को बुलवा लीजिए। मामा जी को बुलवा लीजिए। यहां तक कि कुछ दिन रुककर पिता जी को बुलवा लीजिए, लेकिन 'भइया' को मत बुलवाइए। शायद मेरे पांडित्य से पीड़ित लड़कियों की भावना का उच्चताप वह कुछ ज्यादा ही महसूस कर चुकी थीं। सो, उनका फरमान नहीं बदला, तो नहीं बदला। और इसके बाद जब 'भइया' स्कूल गए, तो जो हुआ, उसकी कल्पना करके आज भी मेरी पीठ दुखने लगती है। मैंने कान पकड़ कर सबके सामने कुबूल किया कि आज के बाद मैं कभी पंडित बनने का प्रयास नहीं करूंगा। यदि ऐसा करता पाया जाऊं, तो जो सजा चोर की, वही सजा मेरी। कहते हैं न! कि चोर चोरी से जाए, हेराफेरी से न जाए।

जब स्कूल में दाल नहीं गली (या यों कहें कि दाल गले भी तो कैसे, जब पतीली ही जब्त कर ली गई हो), तो मैंने अपने मोहल्ले में पंडित होने का प्रयास शुरू किया। जब मोहल्ले में पांडित्य की सनक ज्यादा ही परवान चढ़ने लगी, तो घर पर शिकायतें आने लगीं। कामिनी, कांति, कंचन, रामदुलारी अपनी मम्मी-पापा या भाइयों के साथ शिकायतों का पुलिंदा लेकर मेरी अम्मा के सामने आने लगीं, तो मुझे लगा कि अभी तक शिकायतें सिर्फ अम्मा के ही दरबार में पेश हुई हैं। यदि कहीं कोई फरियादी 'भइया' के दरबार में पहुंच गया, तो स्कूल वाली गाथा फिर दोहराई जाएगी। इस बार तो मुझे शायद एक हफ्ते से ज्यादा हल्दी पीनी पड़े। ऐसा कुछ न हो, इसके लिए मुझे अपने पांडित्य की पोटेंसी कुछ कम करनी होगी, वरना भइया खाल खींचकर भूसा भरने में देर नहीं लगाएंगे। लेकिन कहावत है न! कि बकरे की मां कब तक खैर मनाएगी? एक न एक दिन छूरी के नीचे उसे आना ही होगा।

एक दिन मैं अनामिका के साथ पंडित होने का प्रयास कुछ ज्यादा ही कर गया। रोती हुई अनामिका घर पहुंची। उसके बाबा अनामिका को लेकर मेरे घर पहुंच गए। 'भइया' घर के

बाहर ही बैठे थे। मेरी पेशी हुई। मैंने घिघियाते हुए कहा, 'मेरी क्या गलती है। कबीर के कहने पर ही पंडित होने का प्रयास कर रहा हूं।' शेर की तरह भइया दहाड़े, 'कौन कबीर? वही जिसने पिछले हफ्ते स्कूल में तेरी किताब फाड़ी थी? अब तू उस शोहदे का साथ करने लगा है?' भीतर से डरा हुआ मैं सोचने लगा कि यदि रो पड़ूं, तो शायद अपराध की सांद्रता कुछ कम हो जाए। भइया के सामने 'मर्द को दर्द नहीं' वाली फिलॉस्फी भी काम नहीं आने वाली थी। बस फिर क्या था? आंखों से अश्रुधार बह निकली, 'वो कबीर नहीं, किताब वाले कबीर...संत कबीरदास...।'

भइया ने पूछा, 'किताब वाला कौन-सा कबीर? तुम कहना क्या चाहते हो?'

मैंने कहा, 'किताब वाले कबीरदास ने ही तो लिखा है कि पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोय। ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय। मैं अपने किताब में लिखी कबीरदास की बात का अनुसरण करने का प्रयास कर रहा हूं। मैं तो ढाई आखर पढ़ने की कोशिश अनामिका के साथ कर रहा था। इसमें मेरी क्या गलती है? अगर ढाई आखर पढ़ना गलत है, तो यह कबीरदास जी की गलती है। पूरी रिस्पॉसिबिल्टी उनकी है। बच्चों से ऐसा क्यों कहा कि ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।'

इसके बाद तो आप कल्पना कर सकते हैं कि क्या हुआ होगा। भइया यह कहते हुए मुझ पर पिल पड़े, 'अच्छा! तो तू इसीलिए पढ़ाई-लिखाई ताख पर रखकर छिछोरेपन पर उतारू है। तुझे पहले भी मना किया था, लेकिन तू अपनी हरकतों से बाज नहीं आया। तेरी हरकतों से तो मैं परेशान हो गया हूं। पूरे खानदान की नाक कटवाकर ही छोड़ेगा।' इसके बाद भइया ने अनामिका के बाबा को आश्वस्त किया कि आइंदा, ऐसी कोई हरकत इसने की, तो इसकी खाल खींच लूंगा। टांग तोड़कर घर बैठा दूंगा, भले ही सारी जिंदगी इसे बिठाकर खिलाना पड़े।

मेरी समझ में न तो तब आया था, न अब आया है कि मेरी पिटाई आखिर क्यों होती थी? इसमें मेरा कुसूर क्या था? मैं तो कबीरदास, सूरदास जैसे दासों और संतों की शिक्षाओं का पालन कर रहा था। उनका दासानुदास बनने की कोशिश कर रहा था। हमारे देश के ही नहीं, दुनिया भर के महापुरुषों और साधु-संतों ने कहा है, सबसे प्रेम करो। कबीरदास जी तो इन लोगों से कई हाथ आगे बढ़कर सिर्फ 'ढाई आखर' पढ़ने की ही सलाह देते हैं। वे तो दावे के साथ कहते हैं, स्कूल-कालेजों में डिग्रियां लेने और मोटी-मोटी किताबें पढ़ने-रटने से कोई पंडित (विद्वान) नहीं होने वाला है। इसका सबसे सहज और सरल रास्ता यही है कि प्रेम ग्रंथ पढ़कर विद्वान हुआ जाया जाए। इसलिए अगर मैं अपनी सहपाठिनों, मोहल्ले की लड़कियों से प्रेम करता था, तो भला क्या गलत करता था? मेरी समझ में नहीं आता है कि लोग 'गुड़' खाकर 'गुलगुले' से परहेज क्यों करते हैं? एक ओर तो वे कहते हैं कि साधु-संतों की शरण में जाओ। उनकी शिक्षाओं को दिल में उतारो, उनका अनुसरण करो। अगर संत कबीरदास जी कहते हैं कि झूठ बोलना पाप है, सदा सत्य बोलो। उनकी यह सीख अगर गलत नहीं है, तो फिर ढाई आखर पढ़ने वाली सीख कैसे गलत हो गई? और फिर..चलिए थोड़ी देर के लिए मान लिया कि यह गलत है। तो फिर आप पांचवीं-छठवीं के बच्चे को यह क्यों रटाते फिरते हैं कि पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ। अब अगर कोई किशोर-किशोरी उनकी शिक्षाओं पर अमल करे,तो ठुकाई कर दो। यह कहां का न्याय है। यह शिक्षा व्यवस्था की खामी है या कबीरदास को पढ़करअमल करने वाले किशोर-किशोरियों की? भगवान कृष्ण ने भी तो सबसे प्रेम करने का संदेश दिया है। वे खुद भी तो आजीवन हजारों गोपिकाओं के साथ रासलीला रचाते रहे। हमारे देश के आधुनिक संत-महात्मा रासलीला रचाएं,तो कोई बात नहीं। अगर मैं किसी से प्रेम करूं,प्रेम का इजहार करूं, तो वह गलत है, पिटाई के योग्य है।

वो तो भला हो संत वेलेंटाइन और बाजारवादी शक्तियों का। शायद बाजारवादी शक्तियों ने किशोरों की परेशानी को समझा, उस परेशानी को दूर करने का प्रयत्न किया। इसके लिए किशोर ?किशोरियों को होने वाली दिक्कतों और बाजार की जरूरतों को देखते हुए पहले वेलेंटाइन डे और फिर वेलेंटाइन वीक को इतना प्रचारित कर दिया कि आज छोटे-छोटे बच्चे-बच्चियां अपने मां-बाप, भाई-बहन के सामने भी सीना ठोंककर पंडित हो रहे ?रही हैं या होने की कोशिश करते ?करती हैं। उन्हें मेरी तरह अपने भइया से पिटने की जरूरत नहीं रही। संत वेलेंटाइन की यही खूबी युवाओं को भा रही है। हालांकि संत वेलेंटाइन और संत कबीरदास से पहले ही हमारे देश में मदनोत्सव मनाने की परंपरा रही है। उस युग में शायद गुड़ खाकर गुलगुले से परहेज करने वाली रीति-नीति समाज में प्रचलित नहीं थी। या फिर इन सब मामलों में सामाजिक नियम काफी कठोर थे। तब शायद उदारवादी लोगों ने तय किया होगा कि एक दिन विशेष तय कर लिया जाए और युवाओं को छिछोरी हरकतें करने की छूट प्रदान की जाए, ताकि उनके मन की कुंठाएं धुल जाएं। वे साल भर पाक-साफ बने रहें। छिछोरेपन की छूट के लिए महीना चुना गया फाल्गुन। फाल्गुन आता है, तो अपने साथ मस्ती, उमंग और शरारत साथ लाता है।

फाल्गुन आते ही मन में एक अजीब-सी तरंग बहने लगती है। अंग-अंग में मादकता का समावेश हो जाता है। बाद में शायद लोगों को यह छिछोरापन कुछ ज्यादा ही भाया होगा, तो उन्होंने विशेष छूट लेकर पूरे महीने को ही ऐसी हरकतों के लिए रिजर्व कर लिया। पोपले मुंह वाले बाबा भी नवविवाहिताओं के देवर लगने लगे। हंसी-ठिठोली, नोक-झोंक और नयनों के चलते तीखे तीर से भला बाबा बच भी कैसे सकते थे। कहा भी जाता है कि फागुन में बाबा देवर लागे। अब फाल्गुन और वेलेंटाइन वीक ने सजनी-सजनियों को बौरा दिया है। बचपन में पंडित होने के प्रयास में पिटने वाला मैं हर साल वेलेंटाइन डे से पूर्व और कई दिन बाद तक वेलेंटाइन की खोज में बौराया घूमता रहता था। हर साल सोचता था कि अबकी कोई न कोई वेलेंटाइन मिल ही जाएगी। लेकिन अफसोस है कि हर बार की तरह इस साल भी मुझ 42 साल के नवयुवक को किसी ने घास नहीं डाली। प्रपोज डे बीत गया, चॉकलेट डे कब आया और कब चला गया, पता ही नहीं चला। किस डे, हग डे जैसे तमाम डे मुझे ठेंगा दिखाकर चलते बने। थक-हारकर मैंने फैसला किया है कि मैं अपनी पुरानी वेलेंटाइन (घरैतिन) के साथ वेलेंटाइन डे मनाऊंगा। जो कुछ गिफ्ट-शिफ्ट देना-देवाना है, उसी को दूंगा। आज ही मैं वेलेंटाइन डे मनाने उसके पास जा रहा हूं। मैं जानता हूं, कुछ विघ्न संतोषी टाइप की सजनियां मेरे इस पुनीत कार्य में बाधा डालने का प्रयास करेंगी। ऐसी सजनियों को मैं अभी से आगाह कर रहा हूं कि खबरदार! जो मुझे फोन या एसएमएस भेजकर वेलेंटाइन डे विश किया, तो..।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं चर्चित व्यंग्यकार)

दूधनाथ सिंह: अपनी विनाशलीला के बादशाह

डॉ. रविनंदन सिंह

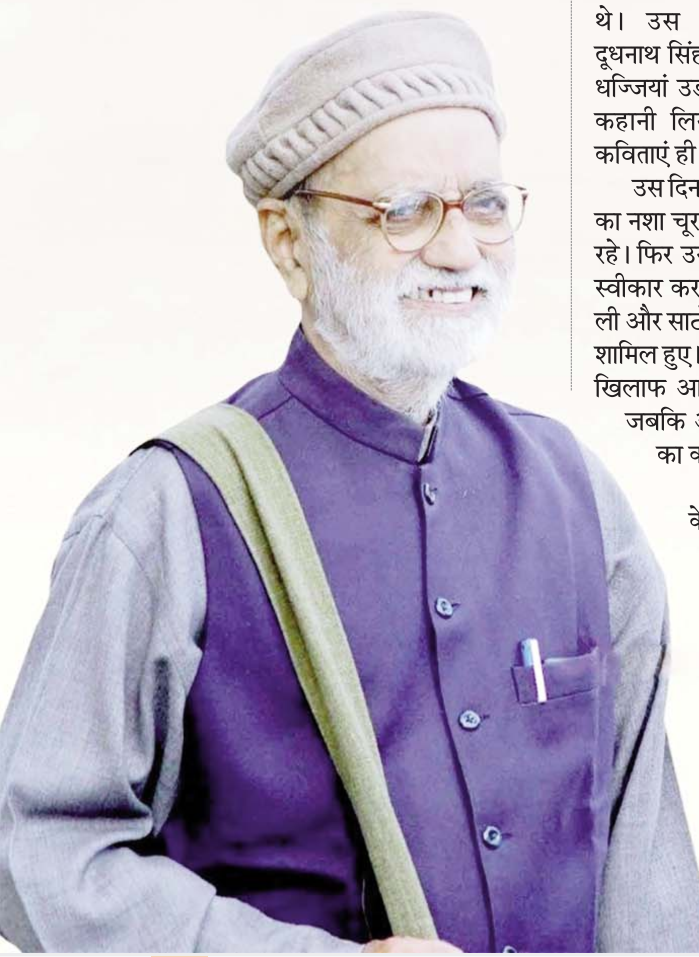

कथाकार एवं आलोचक दूधनाथ सिंह ने एक बार हिंदुस्तानी एकेडमी की एक बैठकी में बातचीत के क्रम में मुझे बताया था कि जब उनकी पहली कहानी की चर्चा आयोजित की गयी थी, भैरवप्रसाद गुप्त, मार्कण्डेय, नरेश मेहता, रघुवंश, अमृतराय जैसे दिग्गज मंच पर विराजमान थे। उस दिन सरेआम दूधनाथ सिंह की कहानियों की धज्जियां उड़ाई गयीं, सलाह दिया गया कि वे कहानी लिखना छोड़कर बेहतर होगा कि कविताएं ही लिखें।

उस दिन दूधनाथ सिंह का कहानीकार बनने का नशा चूर हो चुका था, कई दिनों तक बेचैन रहे। फिर उन्होंने कहानीकार बनने की चुनौती स्वीकार कर ली, जुनून पाल लिया, जिद ओढ़ ली और साठोत्तरी पीढ़ी के सर्वश्रेष्ठ कथाकारों में शामिल हुए। कहते थे कि आजकल लोग अपने खिलाफ आलोचनाओं को बुरा मान जाते हैं, जबकि आलोचना लेखक की मजाई करने का काम करती है।

इलाहाबाद के साहित्यिक जमात के बारे में उनकी एक खौलती हुई टिप्पणी है कि-'अजब दस्तूर है इस शहर का ! तंगहाली और जलालत के भीतर हंसते हुए हमेशा यहां के लोग एक दूसरे की जड़ में मट्ठा डालने को तैयार रहते हैं। आपने ज्योंही थोड़ा खाद-पानी ग्रहण किया, हरियाने को हुए कि तुरन्त एक आदमी आपकी जड़ के आसपास की मिट्टी खुरपिया कर आपकी जड़ों में झांकझूक करेगा और पहला अवसर मिलते ही अपनी बुद्धि की चुटैया खोलकर थोड़ा मट्ठा डालकर, डांकडूंक कर चलता बनेगा। फिर एक आंख से देखता रहेगा कि बावजूद मट्ठे के आपमें हरियाने की ताकत बची है या नहीं। अगर, उसके बावजूद आप हरियाते चले जा रहे हैं तो आप में दम है, वरना अपना डेरा-डण्डा उठाइए और चलते बनिये।

इलाहाबाद आदिवासी मुसहर प्रजाति के रचनाकारों का शहर है। कीचड़ और दलदल में सोंटा गड़ा-गड़ाकर ये मुसहर आपको खींचकर बाहर निकाल लेते हैं। अगर आप ज्यादा फन काढ़ रहे हैं और हँसने को आकुल-व्याकुल हैं तो खट्-से इलाहाबादी मुसहर एक पत्थर की पटिया निकालेगा। आपका फन और जहर घिसकर आपको कन्धे पर डाल लेगा और चलता बनेगा। उसके बाद भी अगर आप उसे डँसने की ताकत रखते हैं तो वह कन्धे से उतारकर आपको स्थापित करेगा और कहेगा, 'हे नाग देवता ! मेरा गदगद प्रणाम, कृपया, ग्रहण करें।'

'फन घिसने में माहिर इस शहर के पुराने लेखक आपको रगड़-रगड़कर चमकाते भी हैं। और आपकी दिव्य कान्ति पर गर्व भी करते हैं। यह इस बनजारा-बिरादरी का रहन-सहन है। यह एक खास किस्म की निजी, बौद्धिक ज्योति से आपको आलोकित करने का वह ढंग है जिससे आप, सिर्फ आप जैसे ही लगें। और आपकी तरह कभी कोई दूसरा न लगे।

मौलिकता का यही संस्कार पाना और देना इस नगर के मुसहरों का धर्म है- एक साहित्यिक धर्म, एक कलात्मक संस्कार से पवित्र करने का अद्भुत अनुष्ठान, जो जाने-अनजाने ही यहाँ घटित होता रहता है। अगर, आप इसमें असफल हुए तो 'निचली तहों' में डाल दिये जाते हैं। या फिर किसी दूसरे शहर में ठिकाना कीजिए और सिरमौर बन जाइए। (संदर्भ - 'लौट आ, ओ धार', दूधनाथ सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, द्वितीय संस्करण 1997, पृष्ठ 99)

दूधनाथ सिंह 1956 में इलाहाबाद आए और आजीवन यहीं के होकर रह गए। 1958 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. करने के बाद दूधनाथ सिंह नौकरी के लिए भटकने लगे। 1960-62 में कलकत्ता में अध्यापन किया किन्तु चस्का तो इलाहाबाद का लग चुका था, अतः कोलकाता छोड़कर चले आए। लिखने-पढ़ने का एक नशा बुरी तरह लग चुका था।

गोष्ठियां, साहित्यिक उठापटकें, गप्पें, काफी हाउसिंग, यह सब उनकी आजीविका के रास्ते के रोड़े थे और दूधनाथ सिंह अपनी बबार्दी में खुशी-खुशी शरीक थे।

वे खुद कहते कि वे अपनी विनाशलीला के बादशाह थे। घर के लोग निराश हो चुके थे। इनके सभी छोटे भाई खेतीबाड़ी या पुलिस की नौकरी में लग चुके थे। दूधनाथ जी स्वयं कहते थे कि मुझसे घरवालों को सबसे ज्यादा आशा थी, मुझ पर परिवार द्वारा बहुत पैसा बर्बाद किया गया। पहले लोग मेरी नजीर देते थे किन्तु उन लोगों की नजर में अब मैं आवारा निकल चुका था। अब मुझ पर बड़ी नौकरी का नहीं बल्कि लेखक बनने की झक सवार थी।

एक समय ऐसा भी था जब उनके पास रहने की कोई जगह नहीं थी। किराया न दे पाने के कारण कई बार उन्हें अपनी बाल्टी, लोटा, बिस्तर और किताबें छोड़कर भागना पड़ा। इलाहाबाद में पुरुषोत्तम नगर, मुट्ठीगंज, चैथम लाइन, लीडर प्रेस कंपाउंड आदि कई ठिकाने बदलने पड़े। यह उनकी भुखमरी के दिन थे। उन्होंने एक जगह लिखा है कि 'मैं लगभग बेपर्द और निहंग हो गया था, एक ऐसे भिखारी की तरह जिसके पास अपने लुगड़े भी नहीं बचे थे। ...मेरा आत्मसम्मान भी नहीं बचा था।'

इन स्थितियों में वे कई दिन रेलवे स्टेशन के हाल के एक कोने में सोते थे। उनकी इस हालत पर दया करके भारती भंडार के मालिक वाचस्पति पाठक ने अपने घर का एक कमरा दूधनाथ सिंह को दिया था। एक अवस्था वह भी आयी जब साथ में पत्नी और दो बच्चे हो गए और दूधनाथ सिंह के पास कोई काम नहीं था।

जिस दिन दूधनाथ सिंह की पहली किताब 'अपनी शताब्दी के नाम' की लेखकीय प्रतियों का बंडल ज्ञानपीठ से प्रकाशित होकर उन्हें मिला तो उस दिन सुबह से घर में खाने को कुछ नहीं था और उस समय वे अपने बेटे को चीनी-पानी पिला रहे थे। फिर भी किताब देखकर आनंद से भर उठे थे। बाद में सुमित्रानंदन पंत की अनुकंपा से विश्विद्यालय में अध्यापक की नौकरी मिली।

जब दूधनाथ के आगे पीछे कोई नहीं था और जब वे रसूलाबाद के सेनेटोरियम में टी.बी. से जूझ रहे थे तब पंतजी अकेले व्यक्ति थे जो उन्हें देखने गए थे। अपनी पुस्तक 'लौट आ, ओ धार' में दूधनाथ सिंह ने बहुत मन से पंतजी का स्मरण किया है।

जब 2016 में दूधनाथ सिंह अपने गुरु डॉ धीरेंद्र वर्मा की ग्रंथावली पर काम कर रहे थे, उन दिनों हिन्दुस्तानी एकेडमी अक्सर आया करते थे। धीरेन्द्र वर्मा एकेडेमी के सचिव रह चुके थे और उनकी प्रायः सभी पुस्तकें एकेडमी पुस्तकालय में उपलब्ध थीं। उन दिनों दूधनाथ जी एक दिन मेरे कार्यालय कक्ष में बैठे हुए थे, उसी समय उनके पास एक फोन आया। कुछ बातें हुईं और दूधनाथ जी सीधे डांटने के अंदाज में बोले 'मैं किसी पुरस्कार के लिए अपनी संस्तुति नहीं कराऊंगा, क्यों कराऊं, मुझे नहीं चाहिए पुरस्कार।

जिस पुरस्कार के लिए खुद आवेदन करना हो और संस्तुति करानी पड़े वह पुरस्कार मुझे नहीं चाहिए।' फोन काटने पर मैंने पूछा कि क्या हुआ गुरुजी? उन्होंने बताया कि कह रहा था कि हिन्दी संस्थान के महात्मा गांधी सम्मान के लिए किसी से जल्दी संस्तुति करा दीजिए, अंतिम तारीख एक दो दिन बची है। ताज्जुब की बात है कि उसी साल उन्हें संस्थान का भारत भारती सम्मान मिला। अगर दूधनाथ सिंह गांधी सम्मान के लिए संस्तुति करा दिए होते तो नियमानुसार उन्हें 'भारत भारती' सम्मान नहीं मिल पाता। वह फोन इसी साजिश के तहत किया गया था।

अक्सर देखा जाता है कि विरोधी विचारधाराओं के लोग एक साथ बैठना भी पसंद नहीं करते। किंतु दूधनाथ जी इसके अपवाद थे। ऐसा ही अनुभव मुझे 2017 में हिंदुस्तानी एकेडेमी के स्थापना दिवस के अवसर पर हुआ। तब मैं एकेडमी में पदाधिकारी था। यह विशिष्ट अनुभव था न्यायमूर्ति गिरिधर मालवीय तथा कथाकार आलोचक दूधनाथ सिंह के बारे में। दोनों समवयस्क थे और दूधनाथ जी मालवीय जी से केवल तीन दिन छोटे थे। विचारधारा के स्तर पर दोनों एक दूसरे के धुर विरोधी थे। जहां जस्टिस गिरिधर मालवीय 2014 संसदीय चुनाव में प्रधानमंत्री मोदी के प्रस्तावक रह चुके थे वहीं कथाकार दूधनाथ सिंह आग्रही वामपंथी, जलेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष और मोदी के घोर विरोधी थे।

यह अवसर था 2017 में हिंदुस्तानी एकेडमी की स्थापना दिवस का। उस समय तीनों वामपंथी संगठन, प्रलेस, जलेस और जसमझ एकेडमी का बहिष्कार कर रहे थे। मुझे जस्टिस गिरिधर मालवीय का बहुत स्नेह मिलता था। जस्टिस प्रेमशंकर गुप्त के बाद वही थे जो मेरी छोटी बड़ी हर मुश्किल को आसान कर देते थे। उन्हें स्थापना दिवस समारोह का मुख्य अतिथि बनाने के लिए मैं उनके घर जाकर मिला। उन्होंने सहर्ष मेरा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। फिर चाय पीने को कहा और एकेडमी की गतिविधियों के बारे में बात करते रहे।

दूसरी तरफ दूधनाथ जी भी मुझे बहुत स्नेह देते थे। वामपंथी संगठनों के बहिष्कार के बावजूद वे अक्सर एकेडमी आते रहते थे और घंटों बैठते थे। उन्होंने स्थापना दिवस की खबर पढ़कर मुझे फोन किया और साधिकार पूछा कि तुम्हारे यहां स्थापना दिवस समारोह होने वाला है तो उसमें मुझे क्यों नहीं बुलाए? मैने कहा कि आप लोग तो एकेडमी का विरोध कर रहे हैं। इस पर उन्होंने कहा कि मैं तो विरोध नहीं कर रहा हूं। बुलाकर तो देखो। फिर मैने उन्हें सादर आमंत्रित किया। उन्होंने पूछा कि मंच पर और कौन-कौन है? मैने बताया कि जस्टिस गिरिधर मालवीय मुख्य अतिथि हैं और अध्यक्षता करेंगे प्रो. के. बी. पाण्डेय। सुनते ही उन्होंने कहा कि मैं जरूर आऊंगा और आने का एक और आकर्षण हैं गिरिधर मालवीय। उनसे कई वर्षों के बाद मुलाकात होगी।

अब मेरे लिए बड़ी दुविधा खड़ी हो गई थी। दूधनाथ सिंह की उपस्थिति के बारे में जस्टिस गिरिधर मालवीय को बताना जरूरी था। उनकी प्रतिक्रिया क्या होगी इस बात को लेकर मेरे मन में गहरा संशय था। कहीं नाराज न हो जाएं। अगर कहीं मना कर देंगे तब क्या होगा। दोनों की विचारधारा विरोधी है। इन सब बातों को लेकर मैं गहरे असमंजस में था। संकोच करते हुए मैं शाम को मालवीय जी के घर पहुंचा और पूरी बात बताई। मेरी आशंका के विपरीत मालवीय जी बहुत खुश हुए और बोले कि यह तो बहुत अच्छी बात है, दूधनाथ जी बड़े विद्वान हैं। उनसे हमारी बड़ी पुरानी आत्मीयता है उनसे मिलकर अच्छा लगेगा। स्थापना दिवस के दिन दोनों आए, मिले और जस्टिस गिरिधर मालवीय ने दूधनाथ जी को गले लगा लिया। पूरे कार्यक्रम के दौरान दोनों के बीच का माधुर्य देखते ही बनता था। शायद बड़े लोग ऐसे ही होते हैं। ⓘ

गुरुदेव को विनम्र नमन

(लेखक वरिष्ठ साहित्यकार एवं सरस्वती पत्रिका के संपादक है)

बेबसी

सविता मिश्रा 'अक्षजा'

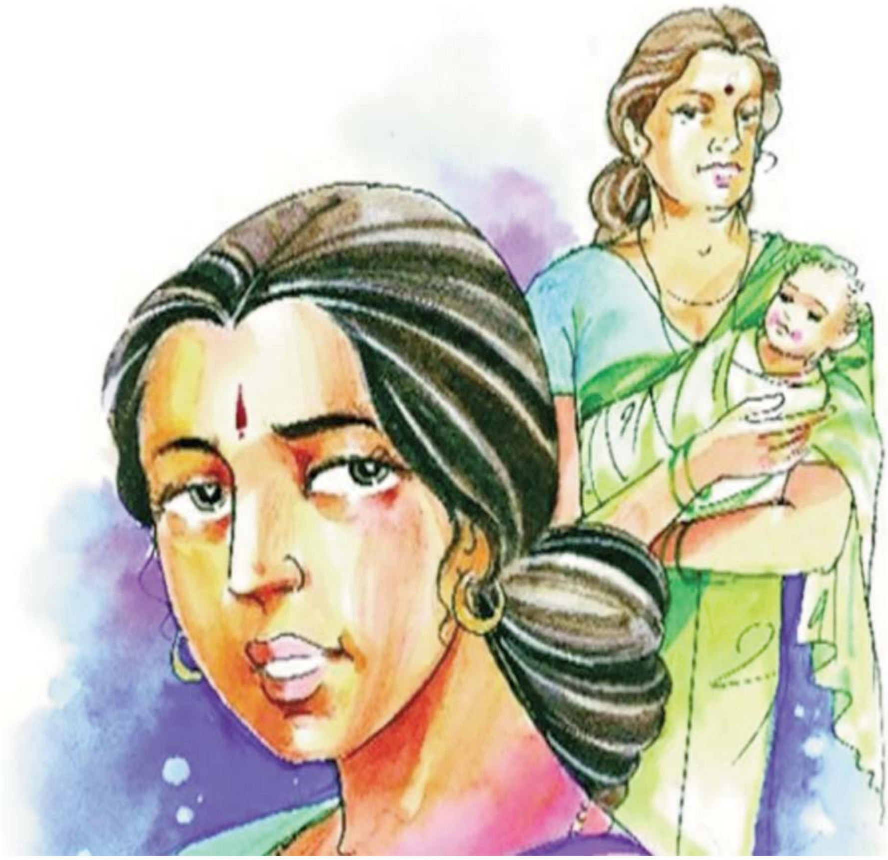

'किसका इंतजार हो रहा ..? नैहर वालों का या फिर ससुरालियों का!' बरामदे में पत्नी को चहलकदमी करते देख पति ने उसे आवाज लगाकर चुटकी ली।

'कुछ साल पहले, यही सूना घर कितना गुलजार रहता था न! कभी बच्चों के दोस्त, कभी आपके महकमे दोस्त, कभी मेरी अपनी पहचान के लोग या फिर पड़ोसी ही अपने आस-पास जुटे ही रहते थे।' पति के पास बैठकर मायूसी भरे स्वर में पत्नी बोली।

'हाँ, और यह मोबाइल भी जब मन होता था घनघना उठता था।'

मोबाइल हाथ में लेकर नम्बरों को अलटते-पलटते हुए कुछ यादकर मुस्कुरा पड़ा पति।

'मोबाइल तो न दिन देखता था, न ही रात। नये-नये बने रिश्तेदारों के फोन तो हर दूसरे दिन आ ही जाते थे।' पत्नी ने समर्थन में आगे कहा।

'पहले तो तुम भी अपना मोबाइल रोज ही, फिर हफ्ते भर में तो उठा के देख ही लेती थी! अब महीनों से छुआ ही नहीं तुमने उसे!' कोने में दुबके हुए मोबाइल को देख पति ने शिकायती लहजे में पत्नी से कहा।

'हाँ, सब नम्बर निहारती रहती थी। किसका नम्बर मिलाऊँ..! जेहन में ऐसा कोई अपना याद आता ही नहीं था, जिसने मुझे फोन करके हालचाल लिया हो।' मोबाइल पर अछूत-सी दृष्टि डालकर पत्नी बोली।

'पदच्युत इन्सान को कौन पूछता है! पर अपने बच्चे!'

'बच्चे भविष्य की राह गये तो पलटकर तो आना था नहीं। लेकिन उनके फोन.!' ठंडी लम्बी साँस छोड़ते हुए पत्नी बोली।

'मेरा फोन भी जल्दी ही काट देती थी तुम! यह कहकर कि बच्चों के फोन आने का समय हो रहा।' पति ने पत्नी की ठुड्डी पकड़कर बोझिल माहौल को धकेलते हुए प्यार से कहा।

'हाँ, शुरू में बेटे-बहुओं का फोन सुबहो-शाम कानों में सुरीली बाँसुरी जो बजाता रहता था। लेकिन...!' बच्चों को यादकर आर्द्र कंठ से वह बोली।

'लेकिन, बाद में उनके भी फोन आने कम हो गये, फिर तो धीरे-धीरे लगभग बन्द ही हो गए। है न?' स्वर की निराशा दुःख के गहरे समुद्र में गोते लगाने फिर से जा पहुँची। 'हाँ, कभी मैं फोन करती थी तो हमारा हाल पूछे बिना ही 'बिजी हूँ माँ' कहकर काट देंते थे। अब तो कई महीनों से यह मुआ डब्बा (मोबाइल) गुनगुनाया ही नहीं।' बात करते-करते उसने मोबाइल उठाया और सारे के सारे नम्बर उसमें से डिलीट कर दिया। अब मोबाइल में सिर्फ एक दूसरे का नंबर चमक रहा था।

SECURE NET
आप सुरक्षित तो देश सुरक्षित
SECURE NET
CABLES & CONNECTORS
CAT6
COMPLETE
NETWORKIN
SOLUTION
305
METERS
SECURE NET
AI
SECURE NET
AI
POE SWITCH
Shiv Shankar Singh
Entrepreneur, Motivational Speaker & Author
FOLLOW US ON | WWW.SECURENETINDIA.COM
5/33

अनंत आकाश पर उदित होती अंतहीन उदीषा

सविता पांडेय

बीते दिनों उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद स्थित गांधी मैदान बुद्धि विहार में हुए उदीषा चौपाला साहित्योत्सव ने साहित्य, कला, संस्कृति व समाज के बहुआयामी संबंधों को नए परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया। 5 दिनों के आयोजन में देश - प्रदेश के विविध हिस्सों से आए साहित्यकारों, समीक्षकों, कलाकारों, रंगकर्मियों, बुद्धि जीवियों, संगीतज्ञों, पत्रकारों, विद्यार्थियों और हजारों लोगों की सहभागिता ने इसे सजीव सांस्कृतिक संगम में रूपांतरित कर दिया। उद्घाटन सत्र में अनेक विशिष्टजन, जन प्रतिनिधि के साथ अभिनेता आशुतोष राणा की उपस्थिति व संगीत संध्या के मनोरंजक कार्यक्रम में पार्श्वगायक सुखविंदर सिंह के संगीत कार्यक्रम ने जन-रुचि को आकर्षित किया।

साहित्यिक गोष्ठियां, विमर्श, प्रस्तुतियां और क्षेत्रीय तथा सांस्कृतिक परंपराओं से सिक्त यह संस्कृति मेला वास्तव में अद्भुत रहा। साहित्योत्सव को दुष्यंत मंच, रामगंगा लॉन्स, जॉन एलिया जोन और भिखारी ठाकुर मंच में विभाजित किया गया, जहां समानांतर रूप से साहित्यिक सत्र, संवाद, कार्यशालाएं, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, नाटक, नौटंकी, लोकनृत्य और शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम आयोजित हुए। एक ओर गंभीर साहित्यिक संवाद विमर्श, दूसरी ओर लोक संस्कृति, रंगमंच और कला संगीत की प्रस्तुतियाँ की गईं। वागीश्वरी पूजन और महाआरती के साथ आरंभ हुए सत्रों ने वातावरण को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक ऊर्जा से भर दिया। जॉन एलिया जोन में आयोजित इंटरैक्टिव थिएटर कार्यशाला ने युवाओं को अभिनय की बारीकियों से परिचित कराया, जबकि दुष्यंत मंच पर पारंपरिक रामलीला की प्रस्तुति ने सांस्कृतिक स्मृति को जीवंत किया। रामगंगा लॉन्स में कथा सत्रों के माध्यम से कहानी कथन की परंपरा और शहरी साहित्यिक इतिहास पर विचार हुआ। 'मुरादाबाद के संगीत घराने' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में रामपुर घराने के उस्ताद गुलाम अब्बास खान और इस उत्सव के परिकल्पक, संरक्षक मंडलायुक्त आञ्जनेय कुमार सिंह ने स्थानीय संगीत परंपरा की समृद्ध विरासत को रेखांकित किया। अभिनेता आशुतोष राणा से रंगमंच और फिल्मों की भाषा संस्कृति विषय पर हुए संवाद में साहित्य, रंगमंच

और सिनेमा के अंतसंबंधों पर सारगर्भित चर्चा की गई। चेतन भगत के जेन-जेड की कहानियां सत्र ने नई पीढ़ी की आकांक्षाओं और समकालीन लेखन की दिशा पर प्रकाश डाला।

मीर से जिगर तक, सोशल मीडिया के दौर में शायरी, डिजिटल युग में बाल साहित्य, माटी, बोली और मानुष, सोशल मीडिया के समय में पत्रकारिता, विज्ञान का साहित्य–आम जीवन के लिए विज्ञान, रील के दौर में शब्द, भारतीय ज्ञान परंपरा, स्त्री स्वर, संघर्ष और संवेदना, रंगकर्म का भविष्य ओटीटी और माइक्रो फिल्म के दौर में, पुस्तकें कितनी पास, कितनी दूर जैसे सत्रों ने साहित्य और समाज के बदलते स्वरूप पर

गंभीर विमर्श प्रस्तुत किया। पूरे साहित्योत्सव के दौरान भिखारी ठाकुर मंच मुक्ताकाश में आयोजित लोक संस्कृति के रंग कार्यक्रमों में देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोकनृत्य और लोकसंगीत प्रस्तुत किए गए। नियाजी ब्रदर्स की कव्वाली, नौटंकी सुल्ताना डाकू, संजय उपाध्याय द्वारा निर्देशित नाटक बिदेसिया, पारसी थिएटर, मुशायरा कवि सम्मेलन दर्शकों के लिए विशेष आकर्षण बने। संगीत संध्याओं में सुखविंदर सिंह, सोना महापात्रा, मनोज तिवारी व पं. साजन मिश्र आदि कलाकारों की प्रस्तुतियों ने भारतीय संगीत परंपरा की विविधता को जीवंत किया। उदीषा चौपाला साहित्योत्सव का मूल उद्देश्य केवल साहित्यिक आयोजन करना नहीं था, बल्कि लोक, परंपरा व संस्कृति को समकालीन रचनाधर्मिता से जोड़ना था। पुस्तक प्रदर्शनी, कला व फोटो प्रदर्शनी, सैंड आर्ट, लोक प्रस्तुतियां, फूड फेस्टिवल और ओपन माइक मंच ने इसे सहभागितापूर्ण उत्सव बना दिया।

(लेखिका स्वतंत्र सांस्कृतिक पत्रकार, चित्रकार एवं कथाकार)

भाई की शादी में सारा तेंदुलकर का जलवा!

सचिन तेंदुलकर के बेटे अर्जुन तेंदुलकर की शादी इन दिनों खूब चर्चा में है। इस खास मौके पर जहां दूल्हा-दुल्हन ने सबका ध्यान खींचा, वहीं अर्जुन की बहन सारा तेंदुलकर भी अपने खूबसूरत लुक की वजह से सुर्खियों में आ गईं। अपने भाई की शादी में सारा तेंदुलकर ने मशहूर डिजाइनर मनीष मल्होत्रा की डिजाइन की हुई गुलाबी रंग की साड़ी पहनी। यह साड़ी बेहद खूबसूरत कढ़ाई और सुनहरे जरी बॉर्डर के साथ तैयार की गई थी, जिसने उनके लुक को और भी खास बना दिया। सारा ने इस साड़ी के साथ गुलाबी रंग का एम्ब्रॉयडरी वाला ब्लाउज पहना था, जिस पर बारीक जरी का काम किया गया था। उनका यह ट्रेडिशनल आउटफिट शादी के माहौल के लिए बिल्कुल परफेक्ट लग रहा था।अपने लुक को पूरा करने के लिए सारा ने भारी ट्रेडिशनल जूलरी पहनी। उन्होंने मल्टी-लेयर नेकलेस, मैचिंग ईयररिंग्स, मांग टीका, कई चूड़ियां और एक स्टेटमेंट रिंग कैरी की थी। मेकअप की बात करें तो सारा ने सॉफ्ट और ग्लॉसी मेकअप चुना, जिसमें हल्का ब्लश, शाइनी बेस और ग्लॉसी लिपस्टिक शामिल थी। उनके बालों को हाफ-अप स्टाइल में सजाया गया था, जिससे उनका पूरा लुक और भी एलिगेंट लग रहा था।अर्जुन तेंदुलकर और सानिया चंडोक की शादी में कई बड़े सेलिब्रिटी शामिल हुए, सारा तेंदुलकर का ट्रेडिशनल अंदाज लोगों को खास तौर पर पसंद आया।

ऐश्वर्या को किसी काम के लिए मेरी परमिशन नहीं चाहिए : अभिषेक

अभिषेक बच्चन और ऐश्वर्या राय बच्चन ने साल 2007 में शादी की थी। साल 2011 में उनकी बेटी आराध्या का जन्म हुआ। बेटी के आने के बाद ऐश्वर्या ने अपना ज्यादा समय परिवार को दिया और फिल्मों से थोड़ा ब्रेक ले लिया। उन्होंने कम फिल्में कीं, लेकिन हमेशा अच्छी और दमदार कहानियां चुनीं। ऐश्वर्या हाल ही में पोन्नियिन सेल्वन फ्क में नजर आई थीं। इस फिल्म को मणिरत्नम ने बनाया था। फिल्म को दर्शकों का खूब प्यार मिला और ऐश्वर्या की एक्टिंग की भी काफी तारीफ हुई। फिल्म देखने के बाद अभिषेक ने सोशल मीडिया पर खुशी जताई और लिखा कि उन्हें अपनी पत्नी पर बहुत गर्व है। सोशल मीडिया पर कुछ लोग ट्रोल भी करते हैं। एक यूजर ने अभिषेक से कहा कि उन्हें ऐश्वर्या को और फिल्में साइन करने देनी चाहिए और खुद बेटी का ख्याल रखना चाहिए।

खुशी मुखर्जी के कपड़ों पर रैपर शैंटी शर्मा का भड़काऊ बयान

एक्ट्रेस और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर खुशी मुखर्जी एक बार फिर चर्चा में हैं। इस बार वजह उनका बोल्ड आउटफिट और उस पर दिया गया रैपर शैंटी शर्मा का बयान है। शैंटी शर्मा के कमेंट के बाद सोशल मीडिया पर लोगों के बीच तेज बहस शुरू हो गई है। शैंटी शर्मा का कहना है कि सोशल मीडिया आज के समय में मनोरंजन का बड़ा प्लेटफॉर्म बन चुका है। लेकिन यहां मौजूद कंटेंट को बच्चे और किशोर भी आसानी से देख लेते हैं। ऐसे में जिन सेलिब्रिटीज और इन्फ्लुएंसर्स के लाखों फॉलोअर्स होते हैं, उन्हें यह सोचना चाहिए कि उनके पोस्ट का समाज पर क्या असर पड़ सकता है। उनके मुताबिक, लोकप्रिय लोगों को ऐसा कंटेंट शेयर करना चाहिए जो लोगों के लिए सही मैसेज दे और समाज पर पॉजिटिव असर डाले। इसी चर्चा के दौरान शैंटी शर्मा ने एक ऐसा बयान दे दिया, जिसने विवाद को और बढ़ा दिया। उन्होंने कहा कि 'ऐसी महिलाएं भारत में बढ़ते रेप कल्चर की वजह बनती हैं।' उनके इस बयान के बाद सोशल मीडिया पर लोगों के अलग-अलग रिएक्शन देखने को मिले। कुछ लोगों ने उनकी बात को सपोर्ट किया, जबकि कई यूजर्स ने इसे गलत और आपत्तिजनक बताते हुए उन्हें ट्रोल किया।

LADDAN

TEACHER TRAINING COLLEGE

Recognized by NCTE, Delhi and Affilited to SCERT Lucknow

D.EL.Ed./B.T.C.

for Minority Institution

Hashim Ali (Bakshi Ji)
Director

Nazim Ali (Shiblu)
Manager

Phulpur to Saidabad Road, Dhurrw,Handia, Prayagraj

Mob. : 9415632873, 9336392654

RNI No. : UPBIL/25/A0683